सत्यमेव जयते

ज्ञानवार्ता

अंक : 13 ISSN 2320 - 2998 वर्ष : 2025

मुबारक मंडी पैलेस ज़िला जम्मू

मानसर झील ज़िला साम्बा

अटल सेतु ज़िला कठुआ

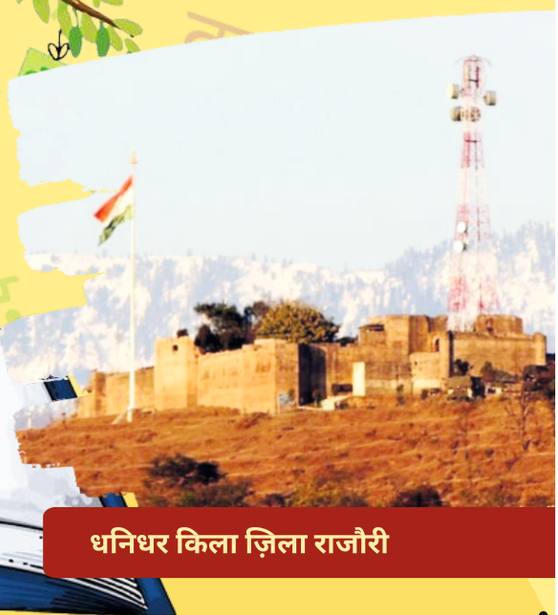

धनिधर किला ज़िला राजौरी

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जम्मू

अध्यक्षीय कार्यालय : भारतीय समवेत औषध संस्थान, जम्मू तवी-180001

नराकास, जम्मू-014 के सदस्य कार्यालय

हिंदी दिवस 2025

के अवसर पर

माननीय गृह मंत्री जी

का संदेश

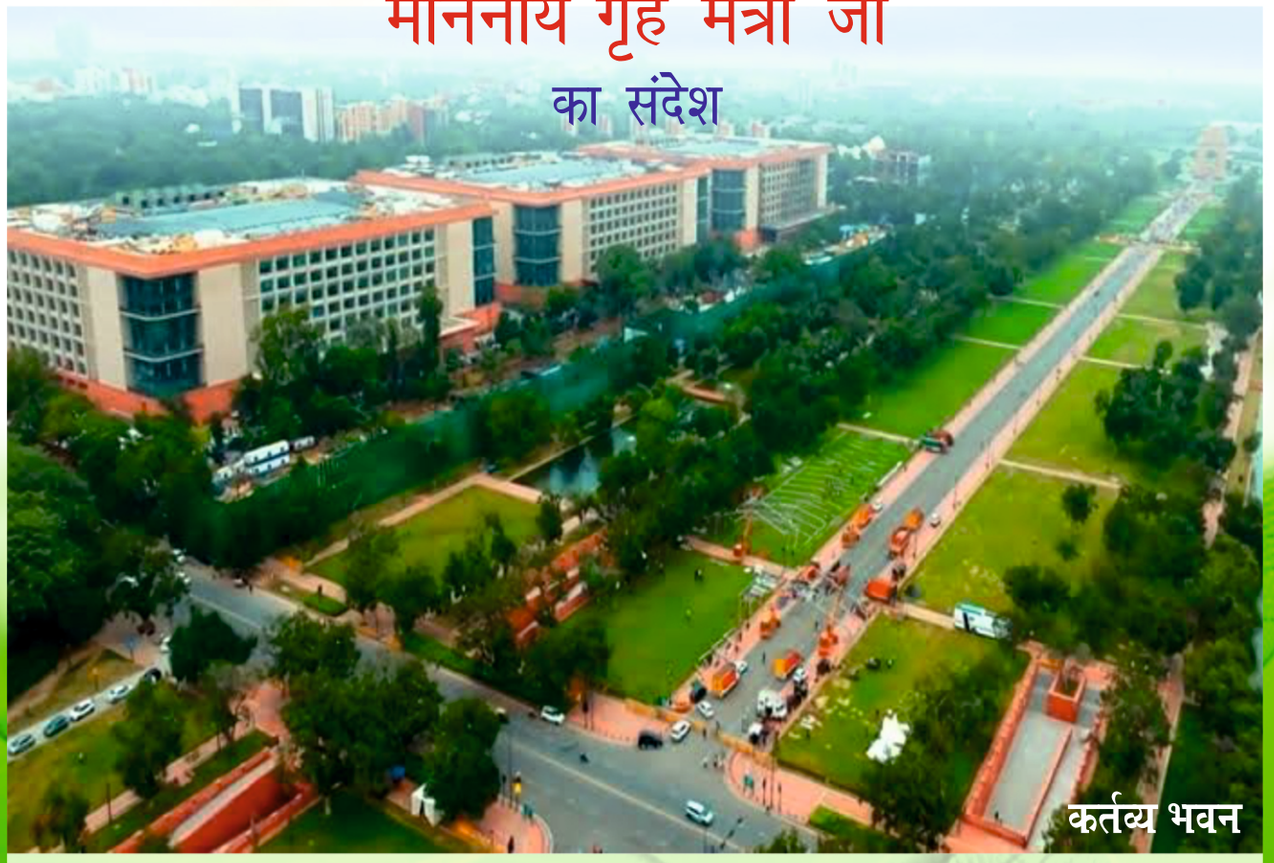

राजभाषा विभाग

गृह मंत्रालय, भारत सरकार

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

सत्यमेव जयते

प्रिय देशवासियो !

आप सभी को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

भारत मूलतः भाषा–प्रधान देश है। हमारी भाषाएँ सदियों से संस्कृति, इतिहास, परंपराओं, ज्ञान–विज्ञान, दर्शन और अध्यात्म को पीढ़ी दर पीढ़ी आगे बढ़ाने का सशक्त माध्यम रही हैं। हिमालय की ऊँचाइयों से लेकर दक्षिण के विशाल समुद्र तटों तक, मरुभूमि से लेकर बीहड़ जंगलों और गाँव की चौपालों तक, भाषाओं ने हर परिस्थिति में मनुष्य को संवाद और अभिव्यक्ति के माध्यम से संगठित रहने और एकजुट होकर आगे बढ़ने का मार्ग दिखाया है।

मिलकर चलो, मिलकर सोचो और मिलकर बोलो, यही हमारी भाषाई और सांस्कृतिक चेतना का मूल मंत्र रहा है।

भारत की भाषाओं की सबसे बड़ी विशेषता यही रही है कि उन्होंने हर वर्ग और समुदाय को अभिव्यक्ति का अवसर दिया। पूर्वोत्तर में बीहू का गान, तमिलनाडु में ओवियालू की आवाज, पंजाब में लोहड़ी के गीत, बिहार में विद्यापति की पदावली, बंगाल में बाउल संत के भजन, आदिम समाज में ढोल–मांदर की थाप पर करमा की गूँज, माताओं की लोरियाँ, किसानों का बारहमासा, कजरी गीत, भिखारी ठाकुर की 'बिदेशिया', इन सबने हमारी संस्कृति को जीवन्त और लोककल्याणकारी बनाया है।

मेरा स्पष्ट मानना है कि भारतीय भाषाएँ एक दूसरे की सहचर बनकर, एकता के सूत्र में बंधकर आगे बढ़ रही हैं। संत तिरुवल्लुवर को जितनी भावुकता से दक्षिण में गाया जाता है, उतनी ही रुचि से उत्तर में भी पढ़ा जाता है। कृष्णदेवराय जितने लोकप्रिय दक्षिण में हुए, उतने ही उत्तर में भी। सुब्रमण्यम भारती की राष्ट्रप्रेम से ओत–प्रोत रचनाएँ हर क्षेत्र के युवाओं में राष्ट्रप्रेम को प्रबल बनाती हैं। गोस्वामी तुलसीदास को हर एक देशवासी पूजता है, संत कबीर के दोहे तमिल, कन्नड़ और मलयालम अनुवादों में पाए जाते रहे हैं। सूरदास की पदावली दक्षिण भारत के मंदिरों और संगीत परंपरा में आज भी प्रचलित है। श्रीमंत शंकरदेव, महापुरुष माधवदेव को हर एक वैष्णव जानता है। और, भूपेन हजारिका को हरियाणा का युवा भी गुनगुनाता है।

गुलामी के कठिन दौर में भी भारतीय भाषाएँ प्रतिरोध की आवाज बनीं और आज़ादी के आंदोलन को राष्ट्रव्यापी बनाने में भूमिका निभाई। हमारे स्वाधीनता सेनानियों ने जनपदों की भाषाओं में, गाँव–देहात की भाषा में लोगों को आज़ादी के आंदोलन से जोड़ा। हिंदी के साथ ही सभी भारतीय भाषाओं के कवियों, साहित्यकारों और नाटककारों ने लोकभाषाओं, लोककथाओं, लोकगीतों और लोकनाटकों के माध्यम से हर आयु, वर्ग और समाज के भीतर स्वाधीनता के संकल्प को प्रबल बनाया। वन्दे मातरम् और जय हिंद जैसे नारे हमारी भाषाई चेतना से ही उपजे और स्वतंत्र भारत के स्वाभिमान के प्रतीक बने।

जब देश आजाद हुआ, तब हमारे संविधान निर्माताओं ने भाषाओं की क्षमता और महत्ता को देखते हुए

इस पर विस्तार से विचार–विमर्श किया और 14 सितम्बर 1949 को देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी को राजभाषा के रूप में अंगीकृत किया। संविधान के अनुच्छेद 351 में यह दायित्व सौंपा गया कि हिंदी का प्रचार–प्रसार हो और वह भारत की सामासिक संस्कृति का प्रभावी माध्यम बने।

पिछले एक दशक में प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय भाषाओं और संस्कृति के पुनर्जागरण का एक स्वर्णिम कालखंड आया है। चाहे संयुक्त राष्ट्रसंघ का मंच हो, जी–20 का सम्मेलन या SCO में संबोधन, मोदी जी ने हिंदी और भारतीय भाषाओं में संवाद कर भारतीय भाषाओं का स्वाभिमान बढ़ाया है।

मोदी जी ने आजादी के अमृत काल में गुलामी के प्रतीकों से देश को मुक्त करने के जो पंच प्रण लिए थे, उसमें भाषाओं की बड़ी भूमिका है। हमें अपनी संवाद और आपसी संपर्क भाषा के रूप में भारतीय भाषा को अपनाना चाहिए, न कि किसी विदेशी भाषा को। तभी हम गुलामी की मानसिकता से पूरी तरह मुक्त हो पाएँगे।

राजभाषा हिंदी ने 76 गौरवशाली वर्ष पूरे किए हैं। राजभाषा विभाग ने अपनी स्थापना के स्वर्णिम 50 वर्ष पूर्ण कर हिंदी को जनभाषा और जनचेतना की भाषा बनाने का अद्‌भुत कार्य किया है। 2014 के बाद से सरकारी कामकाज में हिंदी के प्रयोग को निरंतर बढ़ावा दिया गया है। संसदीय राजभाषा समिति ने वर्ष 1976 में अपनी स्थापना से लेकर 2014 तक माननीय राष्ट्रपति महोदया को प्रतिवेदन के 9 खंड प्रस्तुत किए थे, वहीं 2019 से अब तक 3 खंड प्रस्तुत किए जा चुके हैं। 13–14 नवम्बर 2021 को वाराणसी से प्रारंभ हुए अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलनों की परम्परा भी लगातार आगे बढ़ रही है।

सूचना प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी राजभाषा विभाग ने उल्लेखनीय उपलब्धियाँ हासिल की हैं। न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन पर आधारित 'कंठस्थ 2.0' में आज 5 करोड़ से अधिक वाक्यों का ग्लोबल डाटाबेस उपलब्ध है। 'लीला राजभाषा' और 'लीला प्रवाह' जैसे शिक्षण पैकेजों के माध्यम से 14 भारतीय भाषाओं में हिंदी सीखने की सुविधा उपलब्ध कराई गई है। वर्ष 2022 में शुरू हुआ 'हिंदी शब्द सिंधु' अब तक लगभग 7 लाख शब्दों से समृद्ध हो चुका है।

2024 में हिंदी दिवस पर 'भारतीय भाषा अनुभाग' की स्थापना की गई, जिसका उद्देश्य सभी प्रमुख भारतीय भाषाओं के बीच सहज अनुवाद सुनिश्चित करना है। हमारा लक्ष्य यह है कि हिंदी और अन्य भारतीय भाषाएँ केवल संवाद का माध्यम न रहकर तकनीक, विज्ञान, न्याय, शिक्षा और प्रशासन की धुरी बनें। डिजिटल इंडिया, ई–गवर्नेंस, आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस और मशीन लर्निंग के इस युग में हम भारतीय भाषाओं को भविष्य के लिए सक्षम, प्रासंगिक और वैश्विक तकनीकी प्रतिस्पर्धा में भारत को अग्रणी बनाने वाली शक्ति के रूप में विकसित कर रहे हैं।

मित्रों, भाषा सावन की उस बूँद की तरह है, जो मन के दुःख और अवसाद को धोकर नई ऊर्जा और जीवन शक्ति देती है। बच्चों की कल्पना से गढ़ी गई अनोखी कहानियों से लेकर दादी–नानी की लोरियों और किस्सों तक, भारतीय भाषाओं ने हमेशा समाज को जिजीविषा और आत्मबल का मंत्र दिया है।

मिथिला के कवि विद्यापति जी ने ठीक ही कहा है:
"देसिल बयना सब जन मिट्ठा।"
अर्थात् अपनी भाषा सबसे मधुर होती है।

आइए, इस हिंदी दिवस पर हम हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं का सम्मान करने और उन्हें साथ लेकर आत्मनिर्भर, आत्मविश्वासी तथा विकसित भारत की दिशा में आगे बढ़ने का संकल्प लें।

आप सभी को एक बार फिर से हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

वंदे मातरम्।

नई दिल्ली
14 सितंबर, 2025

(अमित शाह)

साबरमती आश्रम

अध्यक्षीय उद्‌बोधन...

डॉ. जबीर अहमद
अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जम्मू तथा
निदेशक, सीएसआईआर–भारतीय समवेत औषध संस्थान, जम्मू

सीएसआईआर – भारतीय समवेत औषध संस्थान, जम्मू की ओर से अभिनन्दन! नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जम्मू की गृह–पत्रिका "ज्ञानवार्ता" का 13वां अंक आपके समक्ष प्रस्तुत करते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता हो रही है। इस अंक के प्रकाशन पर मैं नराकास, जम्मू के सभी सदस्य कार्यालयों को बधाई देता हूँ। यह पत्रिका राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार, प्रोत्साहन तथा वैज्ञानिक अभिव्यक्ति के संवर्द्धन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती आ रही है।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जम्मू हिन्दी के प्रचार–प्रसार तथा संवर्धन के लिए प्रतिवद्ध है। आज राजभाषा हिन्दी केवल संवाद की भाषा ही नहीं है बल्कि देश के आम–जन तक भारत सरकार की नीतियों, जन उपयोगी योजनाओं, वैज्ञानिक तथा तकनीकी जानकारियों को पहुँचाने का एक सशक्त माध्यम है। इस पत्रिका में यहाँ एक ओर विविध विषयों पर मौलिक रचनाएं प्रकाशित होती हैं, वहीं दूसरी ओर राजभाषा हिन्दी के बारे में जानकारी एवं नराकास की गतिविधिओं की झलकियां भी प्रस्तुत की जाती हैं। मुझे आशा है कि इस अंक में प्रकाशित रचनाएं पाठकों को पसंद आएंगी। यह पत्रिका भविष्य में भी हिन्दी में वैज्ञानिक अभिव्यक्ति को प्रोत्साहित करती रहेगी तथा हमारे नराकास संस्थानों के अनुसंधान, नवाचार एवं ज्ञान–विस्तार के कार्यों को नई दिशा, प्रभा व ऊर्जा प्रदान करती रहेगी।

इस पत्रिका को और अधिक उपयोगी एवं सार्थक बनाने के लिए आपके सुझावों का सदैव स्वागत है।

शुभकामनाओं सहित!

ज़बीर अहमद

(डॉ. जबीर अहमद)

संदेश

कुमार पाल शर्मा
संयुक्त निदेशक (कार्यान्वयन)

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जम्मू (014) द्वारा नराकास की वार्षिक राजभाषा पत्रिका "ज्ञानवार्ता" के तेरहवें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। पूरे राष्ट्र को एकसूत्र में बांधने में हिन्दी भाषा एक सशक्त माध्यम रही है। राष्ट्रीय एकता एवं सांस्कृतिक चेतना को जोड़ने की क्षमता के कारण हिन्दी विश्व को भारतीय संस्कृति का साक्षात्कार करती है। ऐसे प्रकाशनों से राजभाषा का गौरव एवं सम्मान बढ़ता है। "ज्ञानवार्ता" पत्रिका का मुख्य उद्देश्य सदस्य कार्यालयों की राजभाषा गतिविधियों एवं नराकास के प्रयासों की जानकारी सभी सदस्यों तक पहुंचाना और सदस्य कार्यालयों के कार्मिकों को हिन्दी में अपनी सृजनात्मक अभिव्यक्ति का मंच उपलब्ध कराना है, ताकि सदस्य कार्यालयों में हिन्दी का प्रचार- प्रसार बढ़े और भारत की राजभाषा नीति का अनुपालन सुनिश्चित हो सके। मुझे पूर्ण विश्वास है की "ज्ञानवार्ता" पत्रिका का यह अंक अपने इस उद्देश्य में अवश्य सफल होगा और यह पत्रिका राजभाषा हिन्दी के प्रचार- प्रसार में आशानुरूप भूमिका निभाएगी और पाठकों को पसंद आएगी।

पत्रिका के तेरहवें अंक के प्रकाशन एवं उसकी सफलता के लिए मेरी हार्दिक सुभकामनाएँ।

कुमार पाल शर्मा
संयुक्त निदेशक (कार्यान्वयन)

संपादकीय...

संजय शर्मा
सदस्य सचिव, नराकास, जम्मू
सीएसआईआर – भारतीय समवेत औषध संस्थान, जम्मू

प्रिय पाठकों,

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जम्मू की गृह–पत्रिका ''ज्ञानवार्ता'' के इस वर्ष प्रकाशित 13वें अंक के माध्यम से आपसे संवाद करते हुए मुझे अत्यधिक प्रसन्नता हो रही है। यह पत्रिका न केवल हमारे नराकास की राजभाषा गतिविधियों का दर्पण है, अपितु हिन्दी में वैज्ञानिक एवं प्रशासनिक अभिव्यक्ति के प्रसार का एक सशक्त माध्यम भी है।

भारत जैसे विविध भाषायी परिदृश्य वाले देश में, हिन्दी एक सेतु की भाँति कार्य करती है–जो विज्ञान, तकनीक और समाज के बीच संवाद स्थापित करती है। इस पत्रिका के माध्यम से हम न केवल अपने अनुसंधान कार्यों और उपलब्धियों को हिन्दी में साझा करते हैं, बल्कि यह भी सिद्ध करते हैं कि हिन्दी किसी भी वैज्ञानिक विषय के सम्प्रेषण हेतु पूर्णत: सक्षम, समृद्ध और प्रभावशाली भाषा है।

''ज्ञानवार्ता'' का प्रत्येक अंक, नराकास, जम्मू का राजभाषा के प्रति समर्पण का साक्ष्य है। नराकास (जम्मू) सदैव इस दिशा में प्रयत्नशील रहा है कि सभी सदस्य कार्यलयों में राजभाषा हिन्दी का प्रयोग स्वाभाविक रूप से आगे बढ़े और उसका प्रयोग केवल औपचारिकता न रहकर कार्य–संस्कृति का अंग बन जाए। इस संदर्भ में ''ज्ञानवार्ता'' जैसी पत्रिका, वास्तव में, प्रेरणास्रोत हैं।

मैं सम्पादकीय समिति, सभी लेखकों एवं रचनाकारों को उनके उत्कृष्ट प्रयासों के लिए हार्दिक आभार व्यक्त करता हूँ जिनके अथक परिश्रम, समर्पण व अटूट उत्साह और सहयोग से इस पत्रिका का प्रकाशन संभव हो पाया है। आशा करता हूँ कि यह पत्रिका भविष्य में भी हिन्दी में वैज्ञानिक, तकनीकी और साहित्यिक अभिव्यक्ति को नयी ऊँचाइयाँ प्रदान करती रहेगी और आगामी संस्करण को इस से बेहतर रूप देकर हिन्दी भाषा के प्रति, लेखकों एवं रचनाकार अपने दायित्व का निर्वाह करेंगे।

शुभकामनाओं सहित!

(संजय शर्मा)

अंक : 13 वर्ष : 2025

संरक्षक

डॉ. ज़बीर अहमद

निदेशक, भारतीय समवेत औषध संस्थान एवं

अध्यक्ष, नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जम्मू

प्रधान संपादक

संजय शर्मा

कार्यवाहक हिन्दी अधिकारी एवं सदस्य–सचिव

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जम्मू

संपादक मंडल

1. **श्री अब्दुल रहीम**
   मुख्य वैज्ञानिक, सीएसआईआर–भारतीय समवेत औषध संस्थान, जम्मू
2. **श्री राजेश गुप्ता**
   प्रशासनिक अधिकारी, सीएसआईआर–भारतीय समवेत औषध संस्थान, जम्मू
3. **श्रीमती ओनिमा कुजूर**
   वरिष्ठ अनुवाद अधिकारी, रक्षा लेखा प्रधान नियंत्रक, जम्मू
4. **श्रीमती ज्योति प्रभा**
   स्वागती–सीएसआईआर– भारतीय समवेत औषध संस्थान, जम्मू
5. **श्री सुनील कुमार**
   वरिष्ठ हिन्दी अधिकारी, कार्यालय महासेखाकार (लेखा परीक्षा), जम्मू

सहयोग

सुश्री निधि चौधरी

कनिष्ठ आशुलिपिक,

सीएसआईआर–भारतीय समवेत औषध संस्थान, जम्मू

नोटः– पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार रचनाकार के व्यक्तिगत विचार हैं। नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जम्मू अथवा संपादक का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है और न ही वे इसके लिए उत्तरदायी हैं।

संयोजक संपर्क सूत्र : नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, जम्मू

सी.एस.आई.आर.– भारतीय समवेत औषध संस्थान

नहर मार्ग, जम्मू तवी–180 001 (भारत)

दूरभाष : 0191–2585006–13 **फैक्स** : 0191–2586333

Website : www.tolicjammu.org **E-mail** : sanjaysharma.iiim@csir.res.in

अनुक्रमणिका

क्रमांक	विषय	लेखक/लेखिका	पृष्ठ
1.	देवनागरी लिपि और राजभाषा हिन्दी का संरक्षण	संजय शर्मा	1
2.	प्राचीन भारतीय शल्य चिकित्सा की विरासतः सुश्रुत	डा. पूनम शरद मोहोड	6
3.	वीर अभिमन्यु	जितेन्द्र अवाना	8
4.	मन की व्यथा	सुमित रॉय	8
5.	राजभाषा हिन्दी को वास्तव में हिन्दी मय परिवेश में कैसे ढालें	ज्योति प्रभा	9
6.	हम शोध रोशनी के रखवाले	ज्योति प्रभा	12
7.	राजभाषा (कविता)	ध्रुव पंगोत्रा	13
8.	बदलाव	मोहित जांगडा	14
9.	पुरूष का पौरूष	ओम प्रकाश मौर्य	14
10.	पानी	प्रवीण शर्मा	15
11.	बहाने	प्रवीण शर्मा	15
12.	छोड़ आए हम वो गलियां	गोपाल शरण	16
13.	कर्म को शक्ति पर निर्भर है – सफलता	निश्चल रैना	19
14.	राजभाषा पर साहित्यिक लेख	अभिलाषी शर्मा	20
15.	आशा की डोर	बलजीत सिंह सराजी	21
16.	उर्दूः एकता, संस्कृति और साहित्य की भाषा	डॉ. पूनम शरद मोहोड	22
17.	माँ के मायने	ओम प्रकाश मौर्य	23
18.	नीम दादी	प्रवीण शमा	25
19.	इंसान बन जा	ज्योति प्रभा	28
20.	नराकास जम्मू (014) के सदस्य कार्यालयों के राजभाषा कार्यक्रमों की झलकियाँ		29
21.	नराकास जम्मू (014) की निदेशिका		35

देवनागरी लिपि और राजभाषा हिन्दी का संरक्षण

संजय शर्मा
वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी - III
भारतीय समवेत औषध संस्थान, जम्मू – 180001

कोई भी भाषा अभिव्यक्ति को व्यक्त करने का एक सशक्त माध्यम होता है। भाषा के माध्यम से व्यक्ति अपने मन के भाव एक दूसरे तक पहुंचा सकता है और यह भाषा ही है जो हमे एक दूसरे के साथ बांधे रखती है। आज विश्व भर में हजारों, लाखों भाषाएँ बोली, पढ़ी और लिखी जाती हैं।

लिपि किसी भी भाषा की पहचान होती है। लिपि के बिना कोई भी भाषा अधूरी है, बेमानी है। भारत एक विविधताओं भरा देश है। इसमें भी हजारों भाषाएँ, बोली, लिखी और पढ़ी जाती हैं। देवनागरी लिपि भारत की एक प्रमुख लिपि है जो संस्कृत, हिन्दी, मराठी और नेपाली भाषाओं को लिखने में प्रयुक्त होती है। यह लिपि भारत के सर्वाधिक क्षेत्रों में प्रचलित रही है। उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, बिहार, महाराष्ट्र, राजस्थान, गुजरात आदि प्रान्तों में उपलब्ध शिलालेख, ताम्रपत्रों, हस्तलिखित प्राचीन ग्रन्थों में देवनागरी लिपि का ही सर्वाधिक प्रयोग हुआ है। देवनागरी लिपि का विकास ब्राहिमी लिपि से हुआ। ब्राहिमी लिपि की उत्तरी शाखा को नागरी कहा जाता था जो बाद में देव भाषा संस्कृत से जुड़ गई, परिणामतः नागरी का नाम देवनागरी हो गया।

देवनागरी हिन्दी की राजभाषा के रूप में मान्यताः

नागरी लिपि की कुछ विशेषताओं के कारण यह संभावना हमेशा बनी रहेगी कि जैसे यूरोपीय भाषाओं में रोमन लिपि को स्वीकार कर लिया वैसे ही भारतीय भाषाएँ भी नागरी को स्वीकार करें। हालांकि यह संभावना स्वेच्छा और लोकतांत्रिक मूल्यों पर ही आधारित होनी चाहिए। यह देश के अधिकांश भागों में प्रयोग की जाती है। अपनी विशेषताओं के कारण ही संविधान सभा द्वारा देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिंदी को राजभाषा स्वीकार किया गया। उन्नीसवीं सदी के मध्य में कलकत्ता हाईकोर्ट के जस्टिस शारदाचरण मित्र ने एक प्रस्ताव रखा था कि भारत की सभी भाषाओं की एक ही लिपि 'नागरी' रहे जिससे कि इन भाषाओं में आदान–प्रदान बढ़े। इसके लिए उन्होंने कोलकत्ता में ही 'एकलिपि–विस्तार परिषद' की स्थापना भी की। हालांकि उनका यह प्रयास सफल न हो सका।

अंततः देवनागरी लिपि में लिखी गई हिंदी को 14 सितंबर, 1949 को संविधान सभा द्वारा भारत संघ की राजभाषा के रूप में अपनाया गया था। इसकी स्मृति को ताजा रखने के लिए 14 सितम्बर का दिन प्रतिवर्ष 'हिन्दी दिवस' के रूप में मनाया जाता है। यहाँ यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि भारतीय संविधान किसी भी भाषा को 'राष्ट्रभाषा' के रूप में नामित नहीं करता है।

भारत सरकार द्वारा अनुमोदित मानक हिंदी वर्णमाला में 11 स्वर और 35 व्यंजन शामिल हैं। हालांकि, पारंपरिक हिंदी वर्णमाला को 13 स्वरों और 33 व्यंजनों से बना माना जाता है। हिंदी वर्णमाला में अक्षरों का आयोजन ध्वनियों के ध्वन्यात्मक वर्गीकरण (जहां उन्हें मुंह में व्यक्त किया जाता है) के आधार पर किया जाता है, जिसे बहुत व्यवस्थित माना जाता है।

राजभाषा हिंदी का मुख्य उद्देश्य केंद्र सरकार और राज्य सरकारों के बीच संचार के लिए भाषा के रूप में कार्य करना है और देशभर में केंद्र सरकार के प्रशासन के लिए, विशेष रूप से हिंदी भाषी क्षेत्रों में।

हिन्दी को राजभाषा के रूप में स्वीकार किए जाने का औचित्यः

हिन्दी को राजभाषा का सम्मान कृपापूर्वक नहीं दिया गया, बल्कि यह उसका अधिकार है। यहां अधिक विस्तार में जानने की आवश्यकता नहीं है, केवल राष्ट्रपिता महात्मा गांधी द्वारा बताये गये निम्नलिखित लक्षणों पर दृष्टि डाल लेना ही पर्याप्त रहेगा, जो उन्होंने एक 'राजभाषा' के लिए बताये थेः

(१) प्रयोग करने वालों के लिए वह भाषा सरल होनी चाहिए।

(२) उस भाषा के द्वारा भारतवर्ष का आपसी धार्मिक, आर्थिक और राजनीतिक व्यवहार हो सकना चाहिए।

(३) यह जरूरी है कि भारतवर्ष के बहुत से लोग उस भाषा को बोलते हों।

(४) राष्ट्र के लिए वह भाषा आसान होनी चाहिए।

(५) उस भाषा का विचार करते समय किसी क्षणिक या अल्प स्थायी स्थिति पर जोर नहीं देना चाहिए।

इन लक्षणों पर हिन्दी भाषा बिल्कुल खरी उतरती है।

राष्ट्रीय हिन्दी दिवस की भांति विश्व हिन्दी दिवस भी प्रतिवर्ष 10 जनवरी को मनाया जाता है। इसका उद्देश्य विश्व में हिन्दी के प्रचार–प्रसार के लिये जागरूकता पैदा करना तथा हिन्दी को अन्तराष्ट्रीय भाषा के रूप में पेश करना है। विदेशों में भारत के दूतावास इस दिन को विशेष रूप से मनाते हैं। सभी सरकारी कार्यालयों में विभिन्न विषयों पर हिन्दी में व्याख्यान आयोजित किये जाते हैं। विश्व में हिन्दी का विकास करने और इसे प्रचारित–प्रसारित करने के उद्देश्य से विश्व हिन्दी

सम्मेलनों की शुरुआत की गई और प्रथम विश्व हिन्दी सम्मेलन 10 जनवरी 1975 को नागपुर में आयोजित हुआ था इसीलिए इस दिन को 'विश्व हिन्दी दिवस' के रूप में मनाया जाता है।

भारत के पूर्व प्रधानमंत्री मनमोहन सिंह ने 10 जनवरी 2006 को प्रति वर्ष विश्व हिन्दी दिवस के रूप मनाये जाने की घोषणा की थी। उसके बाद से भारतीय विदेश मंत्रालय ने विदेश में 10 जनवरी 2006 को पहली बार विश्व हिन्दी दिवस मनाया था।

प्रशासन और कार्यान्वयनः

संवैधानिक और कानूनी प्रावधानों का अनुपालन सुनिश्चित करने और संघ के आधिकारिक उद्देश्यों के लिए हिंदी के प्रगतिशील उपयोग को बढ़ावा देने के लिए गृह मंत्रालय के तहत जून 1975 में राजभाषा विभाग की स्थापना की गई थी।

राजभाषा नियम, 1976: ये नियम, राजभाषा अधिनियम, 1963 और संविधान के प्रावधानों के साथ, उस सीमा और क्षेत्रों को निर्धारित करते हैं जिसमें केंद्र सरकार अपने आधिकारिक उद्देश्यों के लिए हिंदी और अंग्रेजी का उपयोग करती है। इन नियमों में विस्तार से बताया गया है कि नीति को कैसे लागू किया जाना है, राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को संचार उद्देश्यों के लिए तीन क्षेत्रों ('क', 'ख', और 'ग') में विभाजित किया गया है।

संसदीय समितिरू राजभाषा अधिनियम, 1963 के अनुसार, संघ की राजभाषा के रूप में हिंदी के उपयोग में हुई प्रगति की समय–समय पर समीक्षा करने और राष्ट्रपति को एक रिपोर्ट प्रस्तुत करने के लिए एक संसदीय समिति का गठन किया जाता है।

केंद्रीय हिंदी समिति यह प्रधानमंत्री की अध्यक्षता में शीर्ष नीति बनाने वाली संस्था है, जो संघ की राजभाषा के रूप में हिंदी को बढ़ावा देने के लिए दिशानिर्देश तैयार करती है।

कार्यान्वयन तंत्र

एक बहुस्तरीय संरचना यह सुनिश्चित करती है कि नीति का पालन किया जाना है

1. राजभाषा विभागः

यह विभाग संविधान के प्रावधानों, राजभाषा अधिनियम, 1963 और नियमों के कार्यान्वयन के लिए जिम्मेदार केंद्रीय निकाय है। विभाग हर साल एक वार्षिक कार्यक्रम जारी करता है, जो अपने आधिकारिक कार्य में हिंदी के प्रगतिशील उपयोग को बढ़ाने के लिए सभी केंद्र सरकार के कार्यालयों के लिए विशिष्ट लक्ष्य निर्धारित करता है।

2. कार्यालय–स्तरीय संरचनाः

प्रत्येक केंद्र सरकार के कार्यालय, मंत्रालय या विभाग को स्थापित करना आवश्यक हैः

राजभाषा प्रभाग/हिंदी प्रकोष्ठः नीति की देखरेख और निष्पादन के लिए हिंदी अधिकारी और हिंदी

अनुवादकों जैसे अधिकारियों द्वारा समर्पित अनुभाग।

राजभाषा कार्यान्वयन समितिः एक समिति, जिसकी अध्यक्षता आमतौर पर कार्यालय के प्रशासनिक प्रमुख द्वारा की जाती है, जो हिंदी के उपयोग की प्रगति और वार्षिक कार्यक्रम लक्ष्यों के अनुपालन की समीक्षा करने के लिए नियमित रूप से (त्रैमासिक) बैठक करती है।

नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास): दस से अधिक केंद्र सरकार के कार्यालयों वाले शहरों में, उस शहर के विभिन्न केंद्रीय कार्यालयों के बीच कार्यान्वयन प्रयासों के समन्वय के लिए एक नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति का गठन किया जाता है।

3. निगरानी और समीक्षा

त्रैमासिक प्रगति रिपोर्टः कार्यालयों के राजभाषा विभाग को हिंदी के उपयोग पर त्रैमासिक प्रगति रिपोर्ट संकलित करना और भेजना आवश्यक है।

राजभाषा के संवर्धन और संरक्षण के लिए सरकार की पहलः

भारत की केंद्र सरकार मुख्य रूप से गृह मंत्रालय के तहत राजभाषा विभाग के माध्यम से राजभाषा के रूप में हिंदी के प्रचार और संरक्षण के लिए विभिन्न पहल करती है। ये पहलें संवैधानिक प्रावधानों और राजभाषा अधिनियम, 1963 से उपजी हैं।

प्रमुख पहलें इस प्रकार हैं:

प्रशिक्षण और क्षमता निर्माण–

हिंदी शिक्षण योजनाः केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान (सीएचटीआई) द्वारा केंद्र सरकार के कर्मचारियों को हिंदी भाषा, हिंदी टंकण और हिंदी आशुलिपि में प्रशिक्षण प्रदान करने की एक योजना जिसकी मातृभाषा हिंदी नहीं है।

यह भाषा प्रशिक्षण के लिए प्रबोध, प्रवीण और प्रज्ञा जैसे पाठ्यक्रम प्रदान करता है।

प्रोत्साहन योजनाएं – हिंदी शिक्षण योजना के तहत हिंदी भाषा/टाइपिंग/आशुलिपि परीक्षा उत्तीर्ण करने के लिए केंद्र सरकार के कर्मचारियों को नकद पुरस्कार और एकमुश्त पुरस्कार प्रदान करना।

ई–लर्निंग पहल – राजभाषा के उपयोग के प्रशिक्षण और निगरानी के लिए प्रौद्योगिकी का लाभ उठाने के लिए ई–प्रशिक्षण और आभासी निरीक्षण (ई–निरीक्षण) को लागू करना।

हिंदी कार्यशालाएं – कार्यालय कर्मचारियों को अपने दिन–प्रतिदिन के आधिकारिक कार्य में हिंदी का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित करने के लिए नियमित कार्यशालाएं आयोजित करते हैं।

बुनियादी ढांचा – कार्यालयों को यह सुनिश्चित करने के लिए अनिवार्य किया जाता है कि सभी प्रमुख बुनियादी ढांचे, जैसे फॉर्म, रजिस्टर हेडिंग, नाम–प्लेट, साइन–बोर्ड और पत्र–शीर्ष, द्विभाषी

(हिंदी और अंग्रेजी) हैं।

पुरस्कार और साहित्यिक प्रोत्साहन –

राजभाषा पुरस्कार योजनाएं:

राजभाषा गौरव पुरस्कार ज्ञान, विज्ञान और फोरेंसिक विज्ञान और पुलिस प्रशासन जैसे विशिष्ट क्षेत्रों से संबंधित विषयों पर हिंदी में मौलिक पुस्तक लेखन के लिए सम्मानित किया गया।

ई–टूल्स और चुनोतियाँ:

समय बदला, सोच बदली, काम करने के तरीके बदले, नए–नए डिजिटल उत्पाद ईजाद हो रहे हैं, जिनसे कि कार्य करने की सुगमता भी बढ़ रही है। अब तो लोग अपने मोबाईल, लैपटॉप, कंप्युटर इत्यादि पर बोल कर (voice typing) भी हिन्दी में लिख सकते हैं। अब बाजार में आने वाले कंप्यूटर्स पर युनिकोड की सुविधा रहती है जिससे की हिन्दी में लिखना आसान हो जाता है। राजभाषा विभाग भी समय–समय पर अपने ई–टूल्स तथा अन्य डिजिटल उत्पाद निकालता रहता है जिससे की केंद्र सरकार में कार्यरत अधिकारी कर्मचारी सुगमता से अपने कार्य कर सकें। आजकल बहुत से लोग हिन्दी में लिखने के लिए फोनेटिक टायपिंग का सहारा लेते हैं। फोनेटिक टायपिंग (phonetic typing) में किसी को भी रोमन लिपि के माध्यम से टाइप करके हिन्दी में लिखने की सुविधा मिलती है जिससे कि कार्य सुगमता से तथा शीघ्र हो जाता है।

हालांकि माइक्रोसॉफ्ट जैसी बड़ी–बड़ी अंतरराष्ट्रीय कॉम्पनियाँ, भारत के बढ़ते बाजार को देखते हुए अपने उत्पादों के साथ हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं की सुविधा दे रही हैं, बोल कर (voice typing) या फोनेटिक टायपिंग के माध्यम से लिखी गई हिन्दी की शुद्धता एक बहुत बड़ा प्रश्न चिन्ह पैदा करती है। बोलने वाले के उच्चारण की शुद्धता तथा देवनागरी लिपि की समझ में कमी के कारण लिखने के समय अर्थ का अनर्थ हो सकता है। ऐसे में मोबाईल, लैपटॉप, कंप्युटर इत्यादि पर लिखा गया शब्द या वाक्य सही है, शुद्ध है या नहीं यह निश्चय करना मुश्किल हो जाता है। यह कुछ एक गंभीर चुनोतियाँ हैं, जिन्हें नजर अंदाज नहीं किया जा सकता है। आज देवनागरी लिपि के माध्यम से डिजिटल उपकरणों पर लिखने वालों की संख्या बहुत कम रह गई है। ऐसा ही चलता रहा तो भविष्य में यह संख्या शून्य के समान रह जाएगी। हर कोई बोल कर (voice typing) या फोनेटिक टायपिंग के माध्यम का ही उपयोग करेगा और आने वाली पीड़ियाँ देवनागरी लिपि से दूर हो जाएंगी।

राजभाषा हिन्दी के संरक्षण के लिए यह नितांत आवश्यक हो जाता है कि देवनागरी लिपि का भी संरक्षण किया जाए। लिपि से ही तो किसी भी भाषा की पहचान होती है। तो आईए सब मिलकर राजभाषा हिन्दी के साथ साथ देवनागरी लिपि को भी संरक्षित करने का प्रयास करें। सामूहिक प्रयास से सब संभव है।

***

प्राचीन भारतीय शल्य चिकित्सा की विरासत : सुश्रुत

डॉ. पूनम शरद मोहोड
अनुसंधान अधिकारी (आयुर्वेद)
क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान,
(केन्द्रीय आयुर्वेदीय विज्ञान अनुसंधान परिषद, आयुष मंत्रालय भारत सरकार)
राजेन्द्र नगर, बनतालाब जम्मू

प्राचीन भारतीय चिकित्सा और शल्य चिकित्सा ने स्वास्थ्य सेवा के इतिहास पर अपनी अमिट छाप छोड़ी है। सुश्रुत और चरक जैसी विख्यात हस्तियों के नेतृत्व में, प्राचीन भारतीय चिकित्सा पद्धतियों ने उल्लेखनीय प्रगति और गहन ज्ञान का प्रदर्शन किया है। सुश्रुत संहिता और चरक संहिता में वर्णित उनके योगदान ने आधुनिक चिकित्सा को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित किया है। इस लेख का उद्देश्य प्राचीन भारतीय चिकित्सा और शल्य चिकित्सा की उत्कृष्टता का अन्वेषण करना है जिसमें उनकी अग्रणी शल्य चिकित्सा प्रक्रियाओं, रोग कारण सिद्धांतों, उपचार सिद्धांतों और आयुर्वेद की चिरस्थायी विरासत पर प्रकाश डाला गया है। इसके अलावा, वैज्ञानिक और शोध निष्कर्षों ने आधुनिक युग में इन पद्धतियों की प्रभावशीलता को प्रमाणित किया है, जिससे प्राचीन ज्ञान को आधुनिक स्वास्थ्य सेवा के साथ एकीकृत करने की विश्वसनीयता और प्रेरणा मिलती है।

सुश्रुतः शल्य चिकित्सा के जनक

छठी शताब्दी ईसा पूर्व में, सुश्रुत प्राचीन भारतीय चिकित्सा जगत में एक प्रमुख व्यक्ति के रूप में उभरे। 'शल्य चिकित्सा के जनक' के रूप में प्रतिष्ठित, उनकी मौलिक रचना, सुश्रुत चिकित्सा पर सबसे प्राचीन और व्यापक ग्रथों में से एक है। उल्लेखनीय रूप से, सुश्रुत ने 300 से अधिक शल्य चिकित्सा प्रक्रियाओं का वर्णन किया है, जिनमें मोतियाबिंद शल्य चिकित्सा, राइनोप्लास्टी और सिजेरियन जैसी अग्रणी तकनीके शामिल हैं। उनका योगदान शल्य चिकित्सा से परे भी था, क्योंकि उन्होंने स्वास्तिक यंत्र, संदेश यंत्र, नाडी यंत्र, छेदन शस्त्र, सूची आदि जैसे विभिन्न यंत्र, शस्त्र तथा शल्य चिकित्सा उपकरणों का भी आविष्कार किया था। शल्य चिकित्सा में सुश्रुत की विशेषज्ञता ने आधुनिक शल्य चिकित्सा पद्धतियों के विकास की एक मजबूत नींव रखी। उनके नवीन उपकरणों ने शल्य चिकित्सा की सटीकता और प्रभावशीलता में प्रगति को संभव बनाया।

प्लास्टिक सर्जरी में प्रगति

पूननिर्माण सर्जरी में सुश्रुत की विशेषज्ञता राइनोप्लास्टी से भी आगे तक फैली हुई थी। उन्होंने कानों, होंठों और चेहरे की अन्य विकृतियों को ठीक करने के लिए उन्नत प्रक्रियाएं की। प्लास्टिक सर्जरी में सुश्रुत की नवीन तकनीकें अपने समय के लिए अत्यधिक उन्नत थीं और उन्होंने इस क्षेत्र में भविष्य के कॉस्मेटिक शल्य चिकित्सा के विकास की नीवं रखी।

रोगों का वर्गीकरण

सुश्रुत ने रोगों को उनकी उत्पत्ति, लक्षण और रोगनिदान के आधार पर विभिन्न श्रेणियों में वर्गीकृत किया। रोगों के वर्गीकरण के इस व्यवस्थित दृष्टिकोण ने सटीक निदान और प्रभावी उपचार योजना बनाने में मदद की।

संज्ञाहरण का उपयोग

पश्चिमी दुनिया में संज्ञाहरण के आगमन से सदियों पहले, प्राचीन भारतीय शल्य चिकित्सक शल्य चिकित्सा के दौरान वेदना को कम करने के लिए अफीम, भांग और शराब जैसे पदार्थो का उपयोग करते थे। वेदना प्रबंधन की उनकी समझ ने शल्य चिकित्सा के अनुभव को और अधिक आरामदायक बनाने में योगदान किया। उन्होंने प्रश्वसन संज्ञाहरण का भी प्रयोग किया। उन्होंने संज्ञानाश की स्थिति उत्पन्न करने के लिए सुगंधित पदार्थो और जड़ी बूटियों के धूपन का उपयोग किया, जिससे वेदना रहित शल्य चिकित्सा सुनिश्चित हुई।

एंटीबायोटिक दवाओं का उपयोग

प्राचीन भारतीय चिकित्सक संक्रमणों से लडने के लिए नीम, हल्दी और लहसुन जैसी विभिन्न जडी बूटियों का उपयोग करते थे, जिनमें जीवाणुरोधी गुण होते है। हार्बोमिनरल रसौषधियों भस्म, रसायन इन प्राकृतिक औषधियों का एंटीबायोटिक दवाओं के रूप में उपयोग पश्चिमी चिकित्सा में उनकी खोज से बहुत पहले से होता आ रहा है।

मानव शरीर की समझ

प्राचीन भारतीय चिकित्साकों को मानव शरीर रचना विज्ञान, शरीर क्रिया विज्ञान और रोग विज्ञान का गहन ज्ञान था। इस समझ ने विभिन्न प्रकार की बीमारियों के प्रभावी उपचारों के विकास का मार्ग प्रशस्त किया, जिससे मानव शरीर की जटिलताओं के बारे में उनकी अद्‌भुत अंतर्दृष्टि का पता चला। बीमारियों के रोकथाम पर ध्यान, प्राचीन भारतीय चिकित्सा पद्धतियों में निवारक उपायों के महत्व पर जोर दिया गया था। योग, ध्यान और आहार संबंधी हस्तक्षेप जैसी प्रथाओं के एकीकरण के माध्यम से, उन्होंने समझ स्वास्थ्य बनाए रखने और बीमारियों को प्रकट होने से पहले ही रोकने के महत्व को पहचाना।

महान शल्य चिकित्सक सुश्रुत के अनुसार, एक आदर्श शल्य चिकित्सक की परिभाषा है, "वह व्यक्ति जिसके पास साहस औश्र सूझबूझ हो, जिसके हाथ पसीने से मुक्त हो, जिसकी पकड तीखे और अच्छे औजारों पर कंपन रही हो और जो अपेशल्य क्रियाओं को उस मरीज की सफलता और लाभ के लिए करे, जिसने अपना जीवन शैल्यचिकित्सक को सौंप दिया है। शल्य चिकित्सक को इस पूर्ण समपर्ण का सम्मान करना चाहिए और अपने मरीज को अपने बेटे जैसा मानना चाहिए।"

प्राचीन भारत के आयुर्वेद ने ही शल्य चिकित्सा की आधुनिक अवधारणाओं का संकल्प सुनिश्रित किया। शल्यतंत्र के नाम से जाना जाने वाला प्राचीन शल्य चिकित्सा विज्ञान, आयुर्वेद की एक महत्वपूर्ण शाखा है और इसमें शरीर या मन को पीडा या कष्ट पहुंचाने वाले कारकों को दूर करने के उद्देश्य से सभी प्रक्रियां शामिल है। सामान्य चिकित्सा प्रशिक्षण में शल्य चिकित्सा की प्रमुख भूमिका है। प्राचीन शल्य चिकित्सा विज्ञान को शल्यतंत्र के नाम से जाना जाता था। बाह्य निकायों (शल्य), रोगों, व्रण और विकृतियों का शल्य चिकित्सा विधियों द्वारा उपचार पर केंद्रित है। सुश्रुत द्वारा लिखी सुश्रुत संहिता प्राचीन भारतीय शल्यतंत्र का मौलिक ग्रंथ है। इस ग्रंथ में मुख्यतः, शल्यकर्म एवं अन्य व्याधि चिकित्सा का वर्णन किया है साथ ही शव विच्छेदन, व्रणीतागार, शल्य कक्ष, प्रसूति कक्ष, कुमारागार, संधान कर्म (प्लास्टिक सर्जरी), छेदन, भेदन, लेखन, सीवन आदि शल्य क्रियाओं का उल्लेख है। सुश्रुत प्राचीन काल खंड में अत्यंत उन्नत शल्य चिकित्सा विज्ञान में महारत हासिल थे। प्राचीन भारतीय शल्य चिकित्सा की परंपरा की धरोहर में सुश्रुत का नाम अग्रगण्य है।

वीर अभिमन्यु

जितेन्द्र अवाना (लेखाकार)
कार्यालय प्र. महालेखाकार (ले.व.ह) जम्मू

युद्ध भूमि में जाने की,
अभिमन्यु ने ठानी थी।
मैं तुम्हे ये बतला दूँ,
सोलह साल उसकी जवानी थी।
चक्रव्यूह की विधा उसने,
मां के पेट ही जानी थी।
चक्रव्यूह में सिंहों बीच,
महावीर की ये कहानी थी।
देखो रण में वीर अकेला और,
सामने शत्रु का मेला था।
नहीं घबराया वीर,
बालक वो अलबेला था।
प्राणों कि चिंता न कर वो,
चक्रव्यूह में अकेला कूद पडा।
शत्रु पर काल बनकर,
रण में टूट पडा।
अभिमन्यू ने अपने धनु पर,
जब बाण चढाया था।
अभिमन्यु की देख वीरता,
शत्रु अब घबराया था।
सोलह साल के उस बच्चे ने,
युद्ध में हाहाकार मचाया था।
शत्रु सेना का रक्त उसने,
पानी की तरह बहाया था।
अभिमन्यु की देख वीरता,
दुर्योधन घबराया था।
सभी मिलकर मारो इस को,
स्वर दुर्योधन का आया था।
हंस कर बोला अभिमन्यु,
युद्ध पथ पर हूँ खडा,
हार नहीं मैं मानूंगा,
छल कपट कर मारोगे
वीर नहीं तुम को जानूगा।
फिर शत्रुओं ने मिलकर,
उस पर आघात किया।
युद्ध नियम को तार किया,
युद्ध में वीर अभिमन्यु को
छल से पापियों ने मार दिया।
अभिमन्यु की देख मृत्यु,
देवताओं को भी रोना आ गया।

मन की व्यथा

श्री सुमित रॉय
वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी
सीएसआईआर–भारतीय समवेत औषध संस्थान, जम्मू

सुख भी मुझे प्यारे हैं, दुःख भी मुझे प्यारे हैं।
छोडू मैं किसे भगवान, दोनों ही तो तुम्हारे हैं।
सुख भी मुझे प्यारे हैं, दुःख भी मुझे प्यारे हैं।
सुख दुःख इस जीवन की गाड़ी को चलाते हैं।
सुख दुःख ही हम सबको इंसान बनाते हैं।
संसार की नदिया के, दोनों ही किनारे हैं।
छोडू मैं किसे भगवान, दोनों ही तो तुम्हारे हैं।
दुःख चाहे न कोई भी, सब सुख को तरसते हैं।
दुःख में सब रोते हैं, सुख में सब हंसते हैं।
सुख मिले दुःख के पीछे, दुःख ही तो सहारे हैं।
छोडू मैं किसे भगवान, दोनों ही तो तुम्हारे हैं।
सुख में तेरा शुक्र करूं, दुःख में फरियाद करूं।
जिस हाल में रखे मुझे, मैं तुझको याद करूं।
मैनें तो तेरे आगे ये दोनों हाथ पसारे हैं।
छोडूं मैं किसे भगवान, दोनों ही तो तुम्हारे हैं।

राजभाषा हिन्दी को वास्तव में हिन्दी मय परिवेश में कैसे ढालें

ज्योति प्रभा
हिन्दी विभाग,
सीएसआईआर–भारतीय समवेत औषध संस्थान, जम्मू

भारत में हिन्दी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक संवेदना, प्रशासनिक एकता और जनसंचार की सहज धारा का रूप है। संविधान में देवनागरी लिपि में हिन्दी को राजभाषा का दर्ज प्राप्त है, परन्तु राजभाषा का यह सम्मान तभी सजीव बनता है जब संस्थान, कार्यालय, विभाग और व्यक्ति इसे वास्तविक कार्य–व्यवहार में प्रयोग करें। "हिन्दी–मय परिवेश" केवल दीवारों पर लिखें नारों या वार्षिक राजभाषा समारोहों तक सीमित नहीं है, यह एक गहन, व्यापक और निरंतर प्रयास है जिसमें नीति, व्यवहार, तकनीक और मनोवृति – चारों पहियों को एक साथ गति देनी होती है। जब ये चारों प्रयत्न समान रूप से सक्रिया हों, तभी वास्तव में हिन्दी अपने उददेश्य को पूर्ण कर पाती है।

1. राजभाषा के 'औपचारिक अपनाने' का वास्तविक अर्थ

   किसी भी संस्था में हिन्दी को औपचारिक रूप से अपनाने का आशय केवल आदेश अधिसूचनाएं या शासकीय पत्र हिन्दी में जारी पर देना भर नहीं है। इसका मूल, गहरा, गहरा अर्थ है – प्रशसनिक प्रक्रिया को इस प्रकार रूपायित करना कि हिन्दी संचार का स्वाभाविक और प्राथमिक माध्यम बन जाए।

   औपचारिक अपनाने के तीन प्रमुख स्तंभ है :

क. नीति (**Policy**)

   कार्यालयी कार्य में हिन्दी के प्रयोग हेतु स्पष्ट दिशा–निर्देश, लक्ष्य, समय सीमा तथा दायित्व तय हों। संस्थान स्तर पर राजभाषा वार्षिक कार्यक्रम, प्रगति प्रतिवेदन और त्रैमासिक रिर्पोट प्रणाली का सही पालन अनिवार्य होना चाहिए।

ख. प्रशिक्षण (**Capacity Building**)

   कर्मचारियों को कार्यालयी हिन्दी, नोटिंग–ड्राफ्टिंग, टंकण, विषयगत शब्दावली तथा देवनागरी लिपि के शुदध प्रयोग का नियमित प्रशिक्षण मिलना चाहिए। यह प्रशिक्षण केवल औपचारिक न होकर व्यावहारिक, सरल और उपयोगी होना चाहिए।

ग. अनुपालन (**Compliance**)

   सतत निगरानी, प्रोत्साहन, समीक्षा और मूल्यांकन के बिना कोई भी भाषा–नीति सफल नहीं हो सकती। राजभाषा निरीक्षण, प्रगति के आधार पर पुरस्कार तथा उत्कृष्ट प्रयोग करने वालों की प्रशंसा–ये सभी कदम हिन्दी को जीवंत बनाने में सहायक सिद्ध होते हैं।

   जब ये तीनों पक्ष संगठित रूप में क्रियान्वित होते हैं, तब हिन्दी के औपचारिक अपनाने की प्रक्रिया वास्तव में प्रभावी, परिणामकारी और स्थायी बनती है।

2. "हिन्दीमय परिवेश" बनाने के लिए आवश्यक मनोवृत्ति

किसी भी भाषा के विकास का सर्वाधिक महत्वपूर्ण आधार होता है – मानसिक स्वीकृति। यदि कर्मचारियों और अधिकारियों में यह भाव उत्पन्न हो जाए कि हिन्दी में काम करना सहज, सम्मानजनक और पूर्णतः व्यावसायिक है, तो आधी दूरी वहीं पूरी हो जाती है।

इसके लिए आवश्यक है

– कार्यालयी हिन्दी को बोझिल / कठिन मानने की मिथ्या धारणा को तोड़ना,
– तकनीकी विषयों के लिए मानकीकृत हिन्दी शब्दावली को सुलभ कराना।
– हिन्दी में संवाद करने वालों को सकारात्मक सम्मान देना।
– और सबसे बढकर–हिन्दी को व्यावसायिक / व्यवहारिक दक्षता की भाषा के रूप में स्वीकार करना/कराना।

जब कर्मचारी बैठकों, प्रस्तुतियों, ई–मेल, पत्राचार, नोटशीट और दैनिक संवाद में सहज रूप से हिन्दी का प्रयोग करते हैं, तब भाषा का परिवेश अपने आप परिपक्व, सौम्य और आत्मीय होने के साथ साथ आदतों में शुमार हो जाता है।

3. प्रशासन एवं कार्यालयों में व्यवाहारिक कदम

हिन्दी–मय परिवेश निर्माण हेतु निम्नलिखित व्यावहारिक उपाय अत्यंत प्रभावी सिदध होते हैः

क. कार्य संचार के माध्यम के रूप में हिन्दी

– कार्यालय आदेशः नोटशीट, परिपत्र और ई–मेल अधिकतम हिन्दी में तैयार हों।
– द्विभाषी पत्रों में हिन्दी को प्राथमिक स्थान व सराहना मिले।
– बैठकों की कार्यवाही हिन्दी में लिखी जाए और सम्भव हो तो बैठके हिन्दी में ही संचालित हों।

ख. राजभाषा प्रशिक्षण और शब्दावली

– नियमित राजभाषा कार्यशालाएं, हिन्दी टंकण प्रशिक्षण, तथा कार्यालयी हिन्दी पाठ्यक्रम आयोजित हों।
– तकनीकी व वैज्ञानिक संस्थानों में विषयानुसार हिन्दी शब्दावली उपलब्ध कराई जाए। इससे वैज्ञानिक संचार की गति और स्पष्टता दोनों बढ़ती है।

ग. सूचना, संकेत एवं दृश्य माध्यम

– साइनबोर्ड, पोस्टर, दिशासूचक, नेमप्लेट, लेबल, चेतावनी सूचना सब हिन्दी में हों।
– संस्थान की वेबसाइट, **MIS** प्रणाली, मोबाइल एप और पोर्टल में हिन्दी–इंटरफेस अनिवार्य हो।

घ. तकनीक का उपयोग

तकनीक हिन्दी की शक्ति को कई गुना बढा देती है

– हिन्दी टाइपिंग सॉफ्टवेयर
– वॉयस–टू–टेक्स्ट सुविधाएं
– देवनागरी समर्थित प्लेटफॉर्म
– मशीन अनुवाद, स्पेल–चेक और प्रूफरीडिंग उपकरण

इन साधनों का विशेषज्ञ उपयोग हिन्दी को प्रबंधकीय, वैज्ञानिक, तकनीकी तथा प्रशासनिक क्षेत्रों में अत्यंत सक्षम बनाता है।

4. <u>हिन्दी के प्रति रचनात्मकता सांस्कृतिक वातावरण</u>

हिन्दी–मय वातावरण केवल दस्तावेज़ों की भाषा नहीं होता, यह एक सांस्कृतिक वातावरण है – जिसमें भाषा भावनाओं, संवाद और रचनात्मकता को वाहक बनाती है।

इसके लिए –

– हिन्दी पखवाड़ा, निबंध प्रतियोगिता, कविता पाठ, वाद विवाद आदि गतिविधियां का नियमित आयोजन।

– विभागीय पत्रिका में हिन्दी लेखन को प्राथमिक स्थान।

– हिन्दी साहित्य, विज्ञान–लेखन और कार्यालयी हिन्दी से संबंधित पुस्तकों को पुस्तकालय में उपलब्ध कराना अनिवार्य हो।

जब संस्था में भाषा एक सांस्कृतिक तत्व बनकर स्थापित होती है, तो कर्मचारी उससे आत्मीय रूप से जुडे रहते है।

5. <u>नेतृत्व की भूमिका – (**Top to Down** प्रभाव)</u>

किसी भाषा की सफलता नेतृत्व की प्रेरणा पर अत्यधिक निर्भर करती है।

– वरिष्ठ अधिकारी यदि स्वयं हिन्दी में बोलें, लिखें और प्रस्तुतियां दें, तो पूरा वातावरण स्वतः हिन्दी–उन्मुख व बाध्य हो जाता है।

– राजभाषा बैठकों में स्पष्ट लक्ष्य, समयबद्ध क्रियान्वयन और ठोस निर्देश अत्यंत आवश्यक है।

– पुरस्कार, प्रशंसा–पत्र और प्रोत्साहन–सम्मान हिन्दी के प्रति सकारात्मक ऊर्जा का निर्माण करते हैं।

नेतृत्व का यह सक्रिय सहयोग कर्मचारियों के भीतर हिन्दी के प्रति प्रतिबद्धता और गर्व का भाव उत्पन्न करता है।

6. <u>निष्कर्ष – औपचारिकता से वास्तविकता तक</u>

राजभाषा हिन्दी को औपचारिक रूप से अपनाना महत्वपूर्ण है, परन्तु केवल औपचारिकता से 'हिन्दी–मय वातावरण' नही बनता।

यह वातावरण तब निर्मित होता है जब –

– हिन्दी कार्य–दिनचर्या का स्वाभाविक व व्यावहारिक अंग बने,

– तकनीक हिन्दी को आधुनिक और सक्षम बनाए,

– नेतृत्व प्रेरित करें,

– कर्मचारी इसे गर्व, व्यावसायिकता और सहजता के साथ अपनाएं,

– हिन्दी के प्रति समर्पण व दायित्व की भावना।

हिन्दी–मय परिवेश न केवल भाषा का संवर्धन करता है, बल्कि प्रशासनिक दक्षता, सांस्कृतिक आत्मीयता और राष्ट्रीय एकता को भी सुदृढ़ करता है।

आइए, हम सब मिलकर संकल्प लें –

"हिन्दी को औपचारिकता से आगे बढाकर – कार्य, संवाद, संस्कृति और प्रशासन का जीवंत, प्रभावी और सम्मानित आधार बनाएं।

हम शोध रोशनी के रखवाले

ज्योति प्रभा
हिन्दी विभाग,
सीएसआईआर– भारतीय समवेत औषध संस्थान, जम्मू

1. हम शोध रोशनी के रखवाले, नव–जागरण का दीप जलाते,
   ज्ञान विज्ञान की पावन धरती पर, नित नये पथ स्वयं बनाते।
   यही हमारा तप, यही साधना, यही कर्म की शुचि परंपरा,
   भारत की औषधि–शक्ति बन, हम भविष्य का मार्ग सजाते।
2. **Botany** का प्राण स्वर
   वनस्पति शास्त्र की हर पत्ती में, जीवन का रहस्य छिपा,
   जड, तना, पुष्प सुगंध, रसधारा, सबमें सृष्टि का नाद मिला।
   उपवन में खड़े वैज्ञानिक, धरती के भेद निरंतर पढ़ते पढ़ते,
   बीज से औषधि बनने तक का, हर पल ध्यान से तौलते गढ़ते।
3. **Chemistry** की ज्वाला
   रसायनशाला की नीरव रातें, प्रयोगशालाएं भी गीत सुनाते,
   सूत्रों, यौगिकों, अभिक्रियाओं से स्वप्नों के चमकीले दीप जलाते।
   एक एक बूंद संयोजन की जब, औषधि का रूप रंग है भरती,
   तभी तो देश की चिकित्सा को, नयी सामर्थ्य रसायन है देती।
4. **Fermentation** का जादू
   सूक्ष्मजीवों की अनदेखी सेना, जीवन का अमृत है गढ़ती,
   फमेंटर की गहराई में, नव–औषधि अपनी आंच है धरती।
   धैर्य, संतुलन, समय–नाम, सब विज्ञान का शुद्ध अनुशासन,
   इसी से औषधि का तेज बढे, इस से उपचार सुनिश्चित बन।
5. **Rural Technology** का विश्वास
   गांव की मिट्टी चकई धूप, श्रम की सोंधी सांस है गढाती,
   रूरल टेक्नोलॉजी की शक्ति, विज्ञान को जनता तक पहुँचाती।
   किसान से लेकर शोधकर्ता तक, नवाचार की एक ही है रेखा,
   हमने धरती के हर घर–खेत में, वैज्ञानिक उजियारा फैलाते देखा।
6. **Quality Control** की शुचिता
   शुद्धता के प्रहरी हैं वे, जो हर ऑशिक दोष पकड़ है लेते,
   माप–द्रव्यमान, स्थिरता, मानक–सब नियम कठोर नित है गढ़ते।
   यही गुणवता की दृढ़ रीढ़ है, जो औषधि को है विश्वास दिलाती,
   देश की जनता के स्वास्थ्य हेतु, हर कण में है ईमान बसाती।
7. **Pharmacology** का तर्क
   औषध जब रक्तधारा में जाए, तब क्या असर दिखलाए,
   फार्माकोलॉजी इन उत्तरों को कठोर प्रयोगों से समझाए।
   दुष्प्रभाव, शक्ति, प्रभाव अवधि सब विज्ञान से सत्य बनते,
   तभी सुरक्षित दवा जनहित में, चिकित्सा का है राग रचते।

8. **Lavender-Tulsi-Ashwagandha** की सुगंधित क्रांति

लैवेंडर के खेतों में फैली नीली धूप स्वप्न जगाती,
तुलसी की पावन पत्तियों में, रोगहर शक्ति मुस्काती।
अश्वगंधा की दृढ जड़ें, तन मन में प्राण बल है कहलाती,
तीनों समवेत महिमा बन, भारत की नव हर्बल क्रांति कहलाती।

9. खेत से लैब तक एक ही यात्रा

किसान का श्रम, वैज्ञानिक का ज्ञान, और संस्थान का अनुशासन,
ये तीनों मिलकर रचते हैं औषधि विकास का सुगम सुंदर स्पंदन।
एक का स्वेद, एक का शोध, एक का प्रबंधन–सबका सम्मान,
इसी सामूहिकता से चलता है विज्ञान का यह पावन अभियान।

10. माली से वैज्ञानिक तक सबकी बराबर हिस्सेदारी

माली सुबह सुबह पौधों को सींचे, तभी शोध की ईट टिकेगी,
तकनीशियन द्वारा यंत्र सजाकर, प्रयोग की सच्चाई लिखेगी।
अधिकारी नीतियां रचकर ही तो, इस प्रवाह को गति मिलेगी,
शोध संस्थान की धड़कन में, तब ही तो सब समभाव जुडेगी।

11. हमारा संस्थान हमारी पहचान

ये प्रयोगशालाएँ, गलियारे, उपवन, खेत, विभाग और सभागार,
सब मिलकर गढ़ते हैं शोध का उज्जवल, आत्मनिर्भर संसार।
जहाँ एक लक्ष्य, एक मार्ग–"जनहित में विज्ञान" का हो सागर,
बने हर दिन देश के हेतु, नयी उपलब्धि का दीप जले अनविार।

12. समर्पण का अंतिम श्लोक

हम हैं विज्ञान भूमि के प्रहरी, और औषधि के रचनाकार महान,
संकल्प हमारा अडिग रहेगा–"जन कल्याण हमारा अभियान"।
माली से लेकर अधिकारी तक, हर हाथ में श्रम की ही हो पूजा।
संस्थान सामूहिक शक्ति से दमके, और इसका न हो दृष्टांत दूजा।

राजभाषाः कविता

ध्रुव पंगोत्रा
कक्षा–ग्याहरवी
केन्द्रीय विद्यालय दामाना, जम्मू

सिर्फ भाषा नहीं पहचान है, एक नहीं, सौ नहीं, करोड़ों लोगों की जुबान है।
एक सूत्र में राष्ट्र को बांधे, ऐसा काम ये करती है।
हिन्दू, मुस्लिम, सिख, इसाई, सबकी जुबान में रहती है।
हिन्दी में है एकता, हिन्दी में मिठास है, तभी तो यह भाषा इतनी खास है।

शब्दों की यह मधुर माला, सजती जैसे भावों की धारा।
संविधान में दी है पहचान, बनाए रखे इसका सम्मान।
हिन्दी सिर्फ भाषा नहीं, यह है संस्कृति हमारी।
कविता, गीत या हो कहानी, सभी में यह लगती प्यारी।
हिन्दी हमारी राजभाषा, दिल से इसे अपनाएँगे।
हिन्दी भाषा का मान करना, यह सबको सिखलाएँगे।

बदलाव

मोहित जांगडा
लेखापरीक्षक, प्रशासन–1
कार्यालय प्रधान लेखाकार, जम्मू

जब जब मैं अपने गांव जाता हूँ,
कुछ बदला बदला सा पाता हूँ।
जैसे छोड़ के उन गलियों को निकला था,
अब वैसे नहीं उनमें जी पाता हूँ।
जब भरी दोपहरी में भी बच्चे खेलते थे,
आज की गलियां सुनसान सी लगती हैं।
इन सुनसान गलियों को देख,
उदासी–सी मन में झलकती है।
जब मैं नौकरी करने निकला था,
तो कच्ची सडक ने कहा था,
जल्दी लौट कर आना,
और जब वापस लौटा तो,
पक्की सडक ने कहा,
इतने दिन बाद आए हो जो,
कब तक खुश रह पाओगे
अपने ही घर में आए हो मेहमान बनकर,
जल्द ही वापस लौट जाओगे।
जब मैं अपने घर पहुंचा हूँ तो,
घर भी कुछ बदला बदला सा नजर आता है,
पिता जी कुछ बूढे नजर आते हैं,
माँ के चेहरे पर झुरियां नजर आती हैं,
लेकिन खुद को झुका हुआ मैं पाता हूँ।
पहले मुहँ से बोल कर,
उनको बताना पडता था,
आज मैं उनका मौन समझ जाता हूँ।
जब घर से निकला था तो,
कहते थे,
बेटा, खर्चे की चिंता मत करना,
आज यही पंक्तियां मैं दोहराता हूँ।
मैं अपना गांव, अपना घर कुछ,
बदला बदला सा पाता हूँ।

पुरूष का पौरूष

ओम प्रकाश मौर्य
प्रशासनिक अधिकारी
केन्द्रीय संचार ब्यूरो
सूचना एवं प्रसारण मन्त्रालय
भारत सरकार जम्मू

पुरूष के पौरूष की परीक्षा है जगत।
इसमें पास होना है हमेशा, हर वक्त।।
पुत्र के रूप में मां बाप की सेवा।
मां बाप के हजारों सपनों, ख्वाहिशों,
को पूरा करने में जीवन खपाता पुत्र।
पिता के रूप में बच्चों का लालन–पालन।
बच्चों के सपनों को पंख देता हुआ।
तमाम उम्र कडी धूप में पसीना बहाता पिता।
पति के रूप में पत्नी के सपनों की पतवार बनना।
हर ख्वाहिश और अरमानों को पूरा करना।
पत्नी और मां के झगडों में अनचाहे ही पडना।
दो पाटों के बीच में गेहूं सा पिसता पति।
पुरूष के पौरूष की परीक्षा है जगत।
इसमें पास होना है हमेशा, हर वक्त।

पानी

प्रवीण शर्मा
सेवानिवृत (तकनीकी सहायक)
सीएसआईआर–
भारतीय समवेत औषध संस्थान, जम्मू

न आंखों में पानी न बातों में पानी।
बचा अब कहां रिश्ते नातों में पानी
मिले कोई अपना या प्रिय जन जुदा हो
तो बहता सभी रोम कूपों में पानी।
हो गंगा या यमुना हो सिधुं या शिप्रा
बहे एक ही, भिन्न रूपों में पानी।
किसी के लिए जब भी निकले दुआएं
कहां से चला आऐ आंखों में पानी।
मिले हर कदम पे जो अपनों से धोखे
टपकता अंधेरी सी रातों में पानी।
इमां आदमी का बिका जा रहा है
बचा ही कहां है निगाहों में पानी।
कही नीर खारा कहीं है कसैला
है चलता मेरे साथ राहों में पानी।

सुनामी कहीं जवार भाटा की लहरें
दुखो में रूदन में है आहों में पानी।
कभी तपत धरती पे बरसे जो सावन
उडाऐ महक इन हवाओं में पानी।
झमाझम झरें निर्झर तराने
ढले फिर सुरीले से गीतों में पानी।
ये पानी न होता तो जीवन न होता
निगाहों में तेरी पनाहों में पानी।

बहाने

बहुत बार हमने बनाऐ बहाने
था बचपन बहुत रास आऐ बहाने।
अधूरा रहा जब भी कापी पे लिखना
बीमारी के झट से लगाए बहाने।
बिठाया जो मां ने पढाई की खातिर
मुझे सब है आता सुनाऐ बहाने।
बहुत बार खोटे ही सिक्के चला कर
कपट करके झूठे रचाऐ बहाने।
जो निश्चय किया वो कभी ना निभाया
यूँ खुद से भरोसा गंवाऐ बहाने।
टिका झूठ पर है बहानों का ढांचा
तभी सच को झूठा बनाऐ बहाने।
बहाने का जब झूठ आता पकड़ में।
नजर में ही अपनी गिराएं बहाने।
कहीं झूठे के पैर होते नही हैं
क्यूँ इक झूठ खातिर चलाऐ बहाने।
छिपाने को दुर्गूण बनाए बहाने
मुझे अपना दुश्मन बनाऐ बहाने।

छोड़ आए हम वो गलियां

गोपाल शरण
उप क्षेत्रीय रोजगार अधिकारी
अनुसूचित जाति जनजाति हेतू नैशनल कॅरीर सर्विस सेंटर
रोजगार महानिदेशालय श्रम एवं रोजगार मंत्रालय (भारत सरकार)
तोप शेरखानियां, जम्मू–181121

संस्मरण

आज ही मुझे अपने शहर लौटना था। मेरी गाडी शाम साढे छः बजे छूटती है। समय से थोडा पहले स्टेशन पहुंचना भी था और अपने गांव से स्टेशन का आठ मिलोमीटर का रास्ता भी तय करना था, जिसके लिए मुझे लोकल बस, ऑटो अथवा परिवार के किसी सदस्य की दोपहिया सवारी का सहारा लेना पडता।

अरे ! मैं तो बताना भूल गया कि कोई पंद्रह वर्षो बाद मैं अपने गांव आया था अपने बाल सखा वीरू भैया की बिटिया की शादी में शरीक होने। वीरू भैया अपने न होकर भी अपनों से बढकर थे हमारे लिए। उन्होंने काफी कुछ किया था मेरे लिए। मुझे आज भी याद है मेरे हाईस्कूल पास करने के बाद, इन्होनें ही पिता जी से कहा था – 'चाचा, आगे इसे कुछ बनाना है तो इसे शहर पढने भेज दो। यहां गांव में तो यह भटक जाएगा। तभी एक रिश्तेदार फरिश्ता बनकर हमारी जिंदगी में आये और अपने साथ शहर ले आए। उन्हीं के सानिध्य में रहकर, मैंनें आगे की पढाई पूरी की और श्रम एवं रोगजार मंत्रालय के एक अधीनस्थ कार्यालय में नौकरी में लग गया। शादी समाप्त होते ही मैं शहर लौट रहा था कि वीरू भैया ने कहा –"भाई कुछ दिन और रूक जाते तो हमे अच्छा लगता" और उसके कुछ दिन रूकने का आग्रह दस दिनों की छुटटी में तब्दील हो गया। यहां रहते हुए मुझे भी पुरानी यादें ने घेर लिया। अपने अधिकारी को फोन कर मैंनें अपने छुटटी बढा ली थी। वहां शहर की व्यस्त और दौड़ती भागती जिंदगी में गांव के वे सुनहरे, दिन जो बचपन की असंख्य अनमोल यादों से भरे पडे थे, जाने कहां छूट गए थे और एकदम से यन्त्रवत जीवन चल रहा था। गांव में बचपन के बीते एक एक क्षण एकदम से चलचित्र की भांति घूमने लगे जिनसे निकलकर आना ही मुश्किल हो रहा था। लग रहा था जाने फिर कब आना हो ना हो, अतः तमाम पलों को फिर से महसूस कर लेना चाहता था। रोजी रोटी की तलाश में जाने कहां छोड आए हम वो गलियां, जिनकी यादें हमें आज भी रोमांचित करती हैं।

मेरे छोटे से परिवार में मां पिता जी के अलावा एक बडी बहन थी जिनकी शादी काफी पहले, जब में बहुत छोटा था, तभी हो गयी थी। दादा दादी को मैंनें कभी देखा ही नहीं। पिता जी किसान थे। गांव में एक मिडिल स्कूल था, जो मेरे घर से लगती पतली कच्ची सडक के चौरास्ते के बगल में था, जहां मैं पढ़ने जाया करता था। स्कूल के पास ही चौरास्ते से लगा रमेश दादा का बडा सा दालान था जहां हमेशा कुछ लोगों का बैठक लगा रहता था। खासकर दोपहर में गांव के निठल्ले युवक यहां ताश खेलते और आपस में लड़ते झगड़ते और अजीब अजीब रिश्तों से एक दूसरे को नवाजते। गांव में यही एक जगह थी जहां अपने गावं से लेकर आसपास के गांव एवं कस्बों

की ताजा घटनाओं की सरगर्मी से चर्चा होती थी और फिर पूरे गांव में फैलती थी। गांव में कोई गणमान्य अथवा अधिकारी आते तो वे यहीं बैठते और यहीं उनके आवभगत का इंतजाम किया जाता। रमेशर दादा पूरे इलाके में मशहूर थे और वहां हर आने जाने वाले का स्वागत तम्बाकू से करते थे। चाचा की हथेलियों पर हमेशा तम्बाकू रगड़ी रहती और वहां बैठे बड़े बुजुर्गो के साथ गप्पे लगाई जाती। यह दौर रात दस ग्यारह बजे चलता रहता। गांव के अधिकाश जवान होते लडके ने यहीं से पहली बार तम्बाकू लगाना और पीना सीखा था। मैं भी यहां हर बुधवार को रूपेश भैया के पास बिनाका गीतमाला सुनने बिना नागा आया करता था उनकी मरफी रेडियों पर। मिडिल स्कूल पास करने के बाद मुझे अपने गांव से चार किलोमीटर दूर के गांव के एक हाईस्कूल में सांतवी क्लास में दाखिला मिल गया था और हम वहीं पढ़ने जाने लगे। घर से निकलते और हाईस्कूल पहुंचते तीन चार गांव की सीमाएं पार करनी पडती। अपने गांव में पहले आम का बगीचा मिलता फिर थोड़ी दूर बाद एक नदी बहती थी जिसका पाट काफी चौडा था। नदी सालों भर बहती रहती। मैने उसे कभी सूखते नहीं देखा। इसके घाट पर अक्सर लोगों का मजमा लगा रहता। इसके घाट पर कहीं उजली तो कही कही लाल मिटटी हुआ करती थी गांव वाले घरों की लिपाई–पुताई के लिए लाल गेरू जैसी मिटटी यहां से खोदकर ले जाते, इसलिए नदी के वक्षस्थल पर जगह जगह खाईयां बन गई थी। मैं भी कभी समय निकालकर नदी में तैर लिया करता था। नदी की ढलान से पहले थोडा ऊपर विष्णु बनिया की दुकान थी। अनाज के बदले समान देते वक्त डंडी मारने की कला में वह अत्यंत प्रवीण था। हमारे गांव में लगभग रोज अब्दुल मियां फेरी लगाने आते। उनके थैले में ग्रामवासियों की जरूरत के बहुत सारी चीजें तथा बच्चों के खेलने की चीजें मिलती जो वह गलियों में घूम घूम कर बेचा करते । कभी कभी मैं भी चार आने की कांच की गोलियां खरीदता और गांव की गली में अपने दोस्त वीरू भैया और किशोर के साथ खेलता। बडा मजा आता।

खैर, पहले तो हम नदी भी नाव से पार करते फिर बाद में ग्रामवासियों ने बांस और लकड़ी की मदद से पैदल पुल बना दिया था जिसपर पैदल, साइकिल तथा एकाध जानवर को भी चल निकलने की सुविधा हो गयी थी। बरसात में नदी के पानी लकड़ी के पुल से एक साथ नीचे बहता। हम लोग स्कूल से आते समय कागज की नाव बनाकर पुल के ऊपर से नदी की पानी में बहाते और कुछ दूर तक उसे निहारते रहते जब तक की वह आंखों से ओझल न हो जाता। कभी कभी तो घर से स्कूल के लिए निकलता तो रास्ते मैं ही दोस्तों के साथ बगीचे में फल तोडने रुक जाता, कभी गिल्ली डंडा खेल रहे लडकों को देर तक देखता रहता, कभी रास्ते में दो गांव के बीच हो रही कबड्डी के खेल को घंटों देखता रहता और स्कूल का समय समाप्त होने पर घर लोटता। घर वाले यही समझते कि में स्कूल से पढाई कर लौटा हूँ। मई के महीने में जब स्कूल से एक बजे घर लौटते तो बडे बडे तारों के पेडों के पत्तों की सरसराहट की आवाज कानों में पड़ती बहुत मजा आता।

शाम को घर लौटते समय अक्सर देखता कि गांव के मंदिर पर अपने ही गांव के बड़े बुजुर्ग और पुजारी बाबा भजन कीर्तन में मसरूफ रहते। आरती के समय मंदिर की घंटियां और आरती के गीत दूर दूर तक गूंजते। गांव का

वातावरण बड़ा ही भक्तिमय और पवित्र होकर एक अलग ही तरह का आनन्द का अनुभव प्रदान करता। मेरे पिताजी को भजन कीर्तन एवं भक्ति गीतों से बडा लगाव था। अक्सर उनको मंदिर पर गायन वादन के लिए बुलाया जाता। धीरे धीरे भक्ति संगीत से मेरा भी लगाव हो गया। फिर तो मैं भी गांव के लोगों के साथ भजन कीर्तन का आनन्द उठाने लगा। लोग मेरी आवाज का भी प्रशंसा करते । मेरे अच्छे गाने की बात मेरे स्कूल के प्रधान अध्यापक के पास भी पहुंची। एक दिन शाम को प्रधान अध्यापक महोदय ने मंदिर पहुंचकर मेरा गाना सुना और एक भक्ति गीत पर तो मुझे पुरस्कृत भी किया था।

धीरे धीरे हाई स्कूल की पढ़ाई पूरी हुई। अब हमारे उन्ही रिश्तेदार ने मुझे आगे की पढाई के लिए शहर आने का प्रस्ताव रखा। पिताजी भी मान गए। मैं गांव से शहर आ गया। यही स्नातक की पढ़ाई पूरी की और श्रम एवं रोजगार मंत्रालय के एक अधीनस्थ कार्यालय में नौकरी में लग गया। किन्तु आज भी याद करता हूँ तो लगाता है कि कहां गए वो दिन जब सुबह सवेरे दूर से रंभती गायों की आवाज, खेतों से आती राहट चलने की आवाज, शिशु को लोरी सुनाती मां की आवाज, आंगन बुहारती बहुओं की चूड़ियों की आवाज, बगीचे से आती सूखे पत्तों की सरसराहट की आवाज शाम को आरती के समय मंदिर से आती घण्टियों की आवाज।

आज भी ये आवाजे मेरे अन्तर में जीवित हैं और मन की उतनी ही लुभानी लगती हैं। काश ! अब वो आवाजें सुन पाता, वो मौज मस्ती कर पाता। आज जीवन में सामाजिक व सांसारिक और मनमोहक चीजों की पूर्ति तो लगभग हो रही है पर वो सुकून वो मस्ती न जाने कहां खो गई।

मेरी छुटिटयां तो समाप्त हुई और मुझे शहर लौटने को तैयार होना पडा। भारी मन से वीरू भैया हमें अपनी मोटरसाइकल से स्टेशन छोडने आए थे। मेरा अपना घर सूना पडा था फिर भी गांव छोडते समय बडी तकलीफ हो रही थी। स्टेशन पहुंचने के थोडी देर बाद मेरी गाडी आ चुकी थी। अपनी अटेची लेकर डिब्बे में चढ़ गया और निर्धारित सीट पर बैठ गया। गाड़ी खुल चुकी थी। हाथ हिलाकर हम विदा हुए और दूर तक वीरू भैया को देखता रहा। हम फिर से छोड़ आए उन गलियों को। लगा जैसे बहुत कुछ छूट गया। पा लेने की बेचैनी और खो देने का डर बस यही तो है ज़िंदगी का सफर समाप्त।

कर्म की शक्ति पर निर्भर है - सफलता

निश्चल रैना
कनिष्ठ सचिवालय सहायक, क्रय अनुभाग
सीएसआईआर– भारतीय समवेत औषध संस्थान, जम्मू

मनुष्य की सफलता का सबसे अनिवार्य तत्व कर्म है कर्म हर समय मनुष्य करता है। कर्म करना मनुष्य की मनोवृति है। बच्चे पढ़ाई के क्षेत्र में युवा व्यापार, नौकरी आदि के क्षेत्र में, वृद्धजन परिवार के क्षेत्र में अपना अपना कर्म निभाते हैं।

कर्म के आधार पर ही मनुष्य ने आकाश में उडना वाले पक्षियों की तरह, आकाश में उडने और हवाई जहाजों का निर्माण किया – यह सभी मानव की कल्पनाशक्ति का साकार रूप है। आज हर व्यक्ति को कर्म करने और उसे सिद्ध करने की पूर्ण स्वतंत्रता है। विकास और विनाश दोनों का निर्माण मनुष्य के द्वारा किए गए कार्य से ही सम्भव हो पाया है।

यह एक ऐसा मार्ग है, जो मनुष्य को अपने जीवन के महत्वपूर्ण पहलुओं की ओर अग्रसर करता है और उसे सफलता दिलाता है। यदि मनुष्य केवल कोरी कल्पना करे, अपने बनाये नये सिद्धांतों को वह क्रियान्चित नहीं करे तो मनुष्य कभी भी सफल नहीं हो पाएगा। आज का अधिकांश युवा केवल कल्पना करता है कि उसके पास बंगला, मोटर, नौकर–चाकर विभिन्न प्रकार के सुख और साधन हों जिनकी आज के दैनिक जीवन में उपयोगिता होती है। कल्पना करने मात्र से यह सभी चीजें प्राप्त नहीं हो जाती हैं उसे इनके लिए कर्म करना होगा क्योंकि कर्म ही मनुष्य को उसके द्वारा बनाये गये सपनों को साकार करने और समाज में एक स्थान बनाने में सहयोग करता है।

मनु ने कहा है – "कामना के बिना कोई भी क्रिया नहीं हो सकती, जो कुछ भी मनुष्य करता है कामना और संकल्प का ही फल है"।

सभी महान वैज्ञानिक आविष्कारों में कर्म का वास रहा है उन सभी ने बिना किसी प्रलोभन के मानव जाति के कल्याण के लिए अपने कार्य को किया और सफलता को प्राप्त किया है।

छात्र जीवन विभिन्न गतिविधियों का संचालक है और जीवन की सफलता असफलता यही से निर्धारित होती हैं। शासकीय सेवा में भी कई लोग मात्र अपने दैनिक आचरण से लिप्त रहे हैं। उससे बढकर या अच्छा करने का विचार नहीं रखते है। यदि प्रत्येक व्यक्ति मात्र अपने निर्धारित कर्तव्य को ही पूर्ण कर ले तो वह जीवन में सफल इंसान होगा। आवश्यक नहीं है कि आपके हर कर्म का प्रोत्साहन आपको प्राप्त हो, अतः कर्म किए जाते रहना चाहिए। गीता में भी श्री कृष्ण ने कहा है "कर्म किए जा फल की इच्छा मत कर"।

चरित्र और कर्म दोनो का सम्बन्ध मनुष्य के मन और मस्तिष्क से होता है और यदि चरित्र उच्च है और दृढ़ है तो मनुष्य कभी भी अपने मार्ग से विमुख नहीं होगा। मनुष्य की सफलता की कुन्जी कर्म ही होती है। वह उससे कभी विमुख नहीं हो सकता। प्रत्येक मनुष्य इस संसार के रंगमंच पर एक अभिनय करने आता है। अपनी मनोवृति से प्रेरित होकर अपने पाठ को दोहराता है। यही जीवनरूपी कर्म है।

राजभाषा पर साहित्यिक लेख

अभिलाषी शर्मा
पी जी टी हिन्दी, केन्द्रीय विद्यालय, दोमाना

राजभाषा का नाम पढ़ते ही ज्ञात हो जाता है उच्च श्रेणी में रखी हुई भाषा। जिसके अधीन अन्य भाषाएं कार्य करती हैं। जैसे राजा का नियंत्रण प्रजा पर होता है, वैसे ही राजभाषा अन्य भाषाओं को अपने अधीन में रखती है। हिन्दी हमारी राजभाषा है और भाषा एक ऐसा साधन है, जिसके माध्यम से हम अपनी संस्कृति और सभ्यता को समझने और समझाने में सहायता कर सकते हैं। जिस प्रकार संसार में योग प्रधान रहा है उसी प्रकार हिन्दी राजभाषा के रूप में प्रधान है। भाषा एक परिवार को जोड़ती है, किंतु राजभाषा हमें देश विदेश से जोड़ती है भाषा सीखने से हमारे चारों कौशलों का विकास होता है। जब हम बोलकर व्यक्त करते हैं, तो वाचन विकास होगा, जब हम लिखकर व्यक्त करेंगे तो लेखन कौशल विकसित होगा। पढ़कर बात का व्यक्त करेंगे तो पठन कौशल विकसित होगा और जब किसी की बात को सुनेंगे तो सुनना कौशल विकसित होगा। साहित्य में भाषा के विकास में चारों कौशलों का होना अत्यंत आवश्यक है। जिस प्रकार पहियों बिना रथ अधूरा है, उसी प्रकार राजभाषा के बिना हर कार्य अधूरा है। भाषा से सर्वांगीण विकास होता है, अर्थात कहने का तात्पर्य यह है कि हम चाहें विदेशी भाषा को अपनाएं, विदेशी भाषा की पहचान विदेश जाकर ही होगी। हिन्दी हमारी राजभाषा, भारत की राजभाषा, जिसकी जमीन और जड़ें भारत है, जिसके पास जमीन और जड है, वह पौधा अपने आप विकसित होगा। अंत में, मैं इतना ही लिखना चाहूंगी कि हिन्दी हमारी मां है, मेरे राष्ट्र की पहचान है।

मां की बिन्दी का सम्मान करो, राष्ट्र में हिन्दी का सम्मान करो।

मां के बिना परिवार अधूरा है, हिन्दी के बिना राष्ट्र अधूरा है।

नई शिक्षा नीति का आधार है हिन्दी, सभी भारतीयों की पहचान है हिन्दी।।

जय हिन्द, जय भारत !

आशा की डोर

बलजीत सिंह सराजी
भग्याना जोधपुर, डोडा

कलयुग का है प्रभाव बडा,
सत्य, ईमान है मौन खडा।
झूठ हर द्वार डेरा लगाए है,
पर आशा की डोर बचाए है
व्यभिचार की आग भडक रही है,
पवित्रता की लाज तो सड रही है
नारी को खूब सताए है
पर आशा की डोर बचाए है .....।
रिश्तों की ममता बिकने लगी है,
विश्वास की नीव हिलने लगी है।
खून के रिश्ते भी हुए पराए है,
पर आशा की डोर बचाए .....।
भाई भाई का है गला दबाता,
दोस्त–दोस्त को छल दिखाता
खून के रिश्ते भी मिटाए हैं,
पर आशा की डोर बचाए हैं .....।
धन की हवस में धर्म भुलाया है,
आलस्य में सबने कर्म भुलाया है।
नैतिकता का मान कहां बच पाए है,
पर आशा की डोर बचाए .....।
हम आपस में ही फूट डाले हैं,
व्यर्श ही दिल में धेष पाले हैं।
मानव, मानव को ही खूब रूलाए हैं,
पर आशा की डोर बचाए है .....।
नफरत ने भाई से भाई को लडवाया है,
लोभ ने माता से पुत्र को छीनवाया है।
व्यर्थ में जीवन नर्क बनाए है,
पर आशा की डोर बचाए है .....।
नशे की लत ने युवाओं को सताया है,
भविष्य का सूरज धुएं में छिपाया है।
आलस्य में परिश्रम को भुलाए हैं,
पर आशा की डोर बचाए हैं .....।
युद्ध की ज्वालाएं धधक रही हैं,
असहिष्णुता की आंधियां वह रही हैं।
शांति का संदेश सब बुलाए हैं,
पर आशा की डोर बचाए है .....।
धन के लोभ ने ईमान को खाया है,
भ्रष्टाचार ने हर नीव को हिलाया है।
न्याय का दीपक आंधी बुलाए है,
पर आशा की डोर बचाए है .....।
पाप का बाजार सजा हुआ है,
सत्य का दीप बुझा हुआ है।
हर दिशा में घनघोर अंधियारे हैं,
पर आशा की डोर बचाए है .....।
किसी को कोई लूटे बल से।
कोई डाले फूट झूठे छल से,
मेरे तेरे, तेरे मेरे मैं सब गवाए हैं
पर आशा की डोर बचाए है .....।
प्रकृति को मानव ने खूब रुलाया है,
पेड़ों का जीवन निर्ममता से कटाया है।
जल–वायु में बस जहर मिलाए हैं,
पर आशा की डोर बचाए है .....।
महंगाई ने रोटी को सपना बनाया है,
बेरोज़गारी ने जीवन को रुलाया है।
हर द्वार पर निराशा डेरा जमाए है,
पर आशा की डोर बचाए है .....।
अफसोस नहीं संकट चाहे बढ जाए,
अंधकार भले चाहे जितना छा जाए।
पर हर रात के बाद सवेरा आए है,
पर आशा की डोर बचाए है .....।
सत्य कभी न पूरी तरह मिट पाएगा,
प्रेम का दीप सदा सदा जगमगाएगा।
कलयुग भी आखिर इक दिन हार जाएगा,
जो हारकर फिर से नवयुग लेकर आएगा।
हम हार के बाद विजय गीत गाए हैं,
इसीलिए पर आशा की डोर बचाए है .....।

उर्दू : एकता, संस्कृति और साहित्य की भाषा

डॉ. पूनम शरद मोहोड
अनुसंधान अधिकारी (आयुर्वेद)
क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान
राजेन्द्र नगर, बनतालाब, जम्मू

भारत में सौ से ज्यादा अहम भाषाएं हैं। इनके अलावा ऐसी भाषाएं भी है, जिन्हे बोलियां या माँ–बोली के रूप में जाना जाता है। उनकी तादाद भी सैकड़ों में है। संविधान की अनुसूची में आई 22 भाषाओं में उर्दू देश में सबसे ज्यादा बोली जाने वाली छठी भाषा है। उर्दू भाषा का महत्व अनेक सामाजिक, सांस्कृतिक, साहित्यिक और ऐतिहासिक दृष्टिकोणों से बहुत अधिक है। उर्दू भाषा का विकास मध्यकालीन भारत में हुआ। यह भाषा फारसी, अरबी, तुर्की और हिंदी जैसी भाषाओं के मेल से बनी है। मुगल काल में इसे शाही दरबारों और साहित्य में खूब प्रयोग किया गया। धीरे धीरे यह आम जनजीवन की भाषा बन गई।

सर्वोच्य न्यायालय के न्यायमूर्ति द्वय सुधाशुं धूलिया और के. विनोदचंद्रन के पीठ ने उर्दू के हवाले से हिंदी–उर्दू और देश की गंगा जमुनी तहज़ीब के बारे में जो कहा, वह बरसों याद रखा जाएगा। महाराष्ट्र में किसी बोर्ड पर मराठी के साथ उर्दू प्रयोग के विवाद में फैसला सुनाने की शुरुआत न्यायमूर्ति धूलिया ने अल्जीरियाई मूल के लेखक मूलूद बिनजैदी के एक कथन से की : "जब आप कोई भाषा सीखते हैं तो आप बोलना और लिखना ही नहीं सीखते। आप समूची मानवता के प्रति खुलापन, उदारता, सहिष्णुता, दयाभाव और सहानुभूति रखना भी सीखते हैं।"

न्यायपीठ के फैसले के भावार्थ को हम कुछ इस तरह देख सकते हैं। हमें अपनी भांत धारणाओं को और शायद किसी भाषा के प्रति अपने पूर्वग्रहों को भी, साहस और ईमानदारी से उस सच्चाई की कसौटी पर परखना होगा, जो हमारे राष्ट्र की शानदार विविधता है। हमारी ताकत, जो कभी हमारी कमजोरी नहीं हो सकती। यह एक गलतफहमी है कि उर्दू विदेशी भाषा है। वह इसी देश की धरती पर जन्मी। हमें उर्दू और अन्य हर भाषा से दोस्ती का रिश्ता बनाना चाहिए। पहले हम अपनी अवधारणाओं को स्पष्ट कर लें। भाषा मजहब नहीं है। भाषा किसी मजहब का प्रतिनिधित्व भी नहीं करती। भाषा समुदाय, क्षेत्र और लोगों से संबंध रखती है – किसी धर्म विशेष से नहीं भाषा संस्कृति है। भाषा किसी समुदाय और उसके लोगों की सभ्यता के विकास को मापने की कसौटी है।

इस तरह उर्दू गंगा जमुनी तहजीब, या कहिए हिंदुस्तानी तहजीब, की बेहतरीन मिसाल है जो उत्तर और मध्य भारत के मैदानों की समय सांस्कृतिक विरासत है। संवेदनाओं की अभिव्यक्ति के लिए उर्दू भाषा को इसकी मिठास, नजाकत और तहजीब के लिए जाना जाता है। यह प्रेम, सौंदर्य और संवेदनाओं को व्यक्त करने की एक बेहतरीन भाषा है। उर्दू न केवल साहित्य की, बल्कि सिनेमा, संगीत, नाटक और पत्रकारिता की भी एक प्रमुख भाषा रही है। आज भी उर्दू भाषा का उपयोग विभिन्न क्षेत्रों में किया जाता है जैसे फिल्म टेलीविजन, रेडियो, शायरी महफिलें और शिक्षा संस्थान। कई राज्यों में इसे दूसरी राजभाषा का दर्जा प्राप्त है। हालांकि, बदलते समय के साथ उर्दू को संरक्षित रखने की आवश्यकता भी महसूस की जा रही है।

कोई भी भाषा शिक्षा का माध्यम होने से पहले उसका अतिंम और प्राथमिक उद्देश्य संचार है जो सदा कायम रहेगा। हमें अपनी विविधता का सम्मान करना चाहिए, उसमें आनंद लेना चाहिए। भाषिक विविधता भी इसमें समहित है। उर्दू भाषा भारत की सांस्कृतिक धरोहर है। हमें इसका सम्मान करना चाहिए और इसे आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाने का प्रयास करना चाहिए। यह भाषा न केवल संवाद का माध्यम है, बल्कि दिलों को जोडने का पुल भी है।

माँ के मायने

ओम प्रकाश मौर्य
प्रशासनिक अधिकारी
केन्द्रीय संचार ब्यूरो सूचना एवं प्रसारण मन्त्रालय
भारत सरकार, जम्मू

शाम को करीब छः बजे का समय रहा होगा, गांव का पोस्टमैन हबीब डाकखाने से अपने घर वापस जाते हुए, विमला की ओर कागज का एक टुकडा बढाते हुए बोला चाची तुम्हारा तार आया है, तार का नाम सुनते ही विमला के चेहरे के भाव किसी अनहोनी की आशंका से भर गया, हडबडाते हुए बोली भैया पढ़ो क्या लिखा है, दुखी मन से हबीब पढ़कर सुनाते हुए बोला, इसमें लिखा है – जयलाल का इंतकाल हो गया है – इतना सुनते ही विमला बेसुद्ध होकर जमीन पर गिर पड़ी और दहाड़े मार कर जमीन पर हाथ पटकते हुए रोने लगी। विमला की रोने की आवाज सुनते ही मुहल्ले के काफी लोग इकटठा हो गये, बड़े बुजुर्ग विमला को समझाने लगे, ऊपर वाले ने तुम्हें दो बच्चे दिये हैं, अब इनका मुंह देखो, इनके सहारे जिंदगी काटो, अब न रोओ, भगवान को यही मंजूर था। खेत में काम कर रहे विमला के देवर काशी, देवरानी माया, भी खबर सुनते ही दौड़ते भागते आये और विमला को संभालते हुए अपने भी आंसू नहीं रोक पा रहे थे। जैसे जैसे यह खबर गांव में फैली, धीरे धीरे लोगों का मजमा विमला के घर के सामने लग गया था।

एक समय वह था जब सरकारी आफिस में मुलाजिम पति जयलाल, उसके दो बेटों, के साथ विमला की खुशहाल जिंदगी राजस्थान के श्रीगंगानगर में बीत रही थी, धीरे धीरे, छोटी छोटी बातों पर विमला के पति की अपेक्षाएं बढ़ती गई और यह अपेक्षाएं मनमुटाव का कारण बनती गई और फिर अक्सर आपस में बहस का रूप लेने लगी। बहस में कई बार पति का हाथ विमला पर उठ जाता और उसे घर से बाहर निकाल दिया जाता, दोनों बच्चों को लेकर विमला सड़क के किनारे बेंच पर घंटो सोच विचार करती हुई बैठी रहती, विमला को सबसे अधिक चिंता अपने दोनों बेटों आकाश और विकास की थी इसलिए अपने दोनों बेटों की परवरिश एवं शिक्षा–दीक्षा के लिए न चाहते हुए भी देर रात वापस घर आ जाती और अनुनय विनय करके फिर से घर की दिन चर्या में लग जाती। कुछ दिनों की शान्ति के बाद फिर से वही सिलसिला शुरू हो जाता। अनेकों बार बेटों के कारण विमला सडक की बैंच से घर आई और बार बार वहीं जिल्लतें सहीं। इस स्थिति में विमला आखिर कब तक पति के साथ रह पाती।

अन्ततः उसने आकाश और विकास की परवरिश की जिम्मेदारी खुद अकेले ही उठाने की ठानी और देहरादून में रह रहे अपने भाई को अपना दुःख दर्द पडोस की एक बिटिया से पत्र में लिखवा कर डाक से भिजवा दिया। पत्र पढकर विमला के भाई श्रीगंगानगर आये और बहुत समझाने की कोशिश की, मगर वह ठान चुकी थी कि रोज रोज की जिल्लतें अब वह नहीं सहेगी और अपने भाई से कहा कि मुझे सुलतानपुर उ.प्र. के संतलाल के गांव के घर में पहुंचा दें। उसके भाई ने ऐसा ही किया, दूसरे दिन सुलतानपुर के गांव कादीपुर के लिए विमला और दोनों बच्चे आकाश, विकास को लेकर रवाना हो गये। गांव में विमला के देवर काशी, देवरानी माया पहले से ही छोटे से कच्चे छप्पर वाले घर में रहकर पुश्तैनी दो बीघा जमीन में खेती–बाडी करके मुश्किल से जीवन यापन कर रहे थे। विमला काशी से बड़ी और माया की जेठानी के साथ–साथ स्वभाव से बहुत साहसी थी इसलिए न चाहते हुए भी गांव पहुंचने पर काशी और माया ने विमला का

आवभगत् किया। अब इसी छोटे से कच्चे, छप्पर वाले घर मे रहकर अपने बच्चों का पालन पोषण तथा उन्हें पढ़ने के लिए स्कूल भेजने की बड़ी जिम्मेदारी विमला के कंधों पर थी। काफी समय तक देवर देवरानी पर बोझ बनकर भी नहीं रह सकती थी। उन दिनों गांव में खेतों में काम करने की दिनभर की मजदूरी दो या तीन रुपये थी, वह पढ़ी लिखी भी नहीं थीं कि कहीं कुछ और काम मिल जाता। उसके सामने खेत–खलिहान में काशी और माया का हाथ बंटाने तथा मजदूरी करने के सिवाय और कोई विकल्प नहीं था। विमला ने खेतों में काम करके कुछ पैसे इकट्ठा किए और गांव के सरकारी प्राइमरी स्कूल में बड़े बेटे आकाश का एड़मिशन करवा दिया, विकास छोटा था इसलिए खेतों में काम करते हुए उसे अपने साथ ही रखती।

अब विमला की जिंदगी पटरी पर आ चुकी थी। आकाश का मन पढ़ने में लग गया था। रोज आकाश को स्कूल भेजकर वह खेतों में काम करने चली जाती। देवर काशी और देवरानी माया भी अब विमला का सहयोग करने लगे थे। आकाश को स्कूल भेजने पर माया की ओर से कुछ न नूकुर किया गया था कि स्कूल भेजकर क्या होगा कौन सा इसे बाबू बनना है, मगर जयलाल के आफिस के बाबू के कहे शब्द बार बार विमला को याद आते कि इसको इतना पढ़ाना कि पिता अर्दली है बेटा बाबू बन जाए, इसलिए विमला ठान चुकी थी कि आकाश को जरूर पढ़ाना है। कई बार स्कूल की फीस, कापी, किताब, ड्रेस आदि के लिए उसके पास पैसे नहीं होते थे, पडोसियों से पैसे उधार मांग कर सब पूरा करती थी।

आकाश पढने में गांव के बच्चों से आगे था इसलिए साल दर साल वह पढते हुए आगे बढ़ता गया और विमला द्वारा की गई लगभग दस वर्षों की कठिन मेहनत के बाद आकाश हाई स्कूल परीक्षा, सेकेण्ड डिवीजन पास हो गया, उस समय तक गांव में कोई भी बच्चा हाई स्कूल पास नहीं हुआ था, उस दिन विमला के चेहरे की चमक देखने लायक थी, आखिर हो भी क्यों न, उसकी कठिन तपस्या का फल जो उसे मिला था। विकास भी अब स्कूल जाने लगा था। अपने दोनों बच्चों को पालने, पढ़ाने का उसका सपना पति का साथ न मिलने पर भी पूरा हो रहा था। विमला की उम्र तीस पैंतिस साल की होने पर भी अपना दूसरा घर बसाने के बारे में उसने कभी नहीं सोचा, किसी के ऐसा कहने पर, कहती, मेरे बच्चे अनाथ हो जायेंगे, इन्हें किसके सहारे छोड़ सकती हूँ। मां ही ऐसा सोच सकती है अपने बच्चों के लिए अपनी जिंदगी अकेले काट देती है और पाल पोस कर, पढ़ा लिखा कर उन्हें अपने पैरों पर खड़ा करती है, पिता द्वारा ऐसा करने का उदाहरण पाना दुर्लभ है।

इतने वर्षों के बाद आज पति की मौत की खबर सुनकर वह बद्हवास सी थी, कम से कम पति जिंदा है, इस कारण वह पति का साथ न होने पर भी कभी कभी सज संवर लेती थी, वैधव्य का दाग उस पर नहीं लगा था, मगर नियति के आगे किसकी चलती है। आज उसके पति और बच्चों के पिता के नाम का साया भी उसके साथ नहीं था। जयलाल के जीवित रहते, विमला को पति का, बच्चों को पिता का प्यार नहीं मिला, मगर जयलाल की सरकारी नौकरी के कारण विमला को फेमिली पेंशन, बड़े बेटे आकाश को बाबू की नौकरी मिल गई। पत्नी और मां के रूप में विमला की मेहनत, धैर्य और साहस का फल उसे अब मिल गया था।

नीम दादी

प्रवीण शर्मा
सेवानिवृत (तकनीकी सहायक)
सीएसआईआर–
भारतीय समवेत औषध संस्थान, जम्मू

घर के विशाल आंगन के एक छोर पर नीम का पेड़, और दूसरे छोर पर अपनी मस्ती में झूमता आमों का छोटा सा बगीचा घर की शोभा बढ़ा रहा था। मौसम आने पर आम के पेड़ों पर मंजरियां निकल आती, जिससे सारा वातावरण एक विशेष महक से भर जाता। छोटे बच्चों से लेकर बूढों तक, सभी को आमों के पकने का इंतजार रहता।

आम जब पूरे पक जाते, तो फलों से लदी डालियां अपने आप नीचे झुक जातीं, मानो फल बांटने का निमंत्रण दे रही हों। हरा भरा नीम का पेड आंगन में चारों और फैला हुआ, जब हवा के झोंकों से झूमता, तो उसकी हरी हरी पतियां बडी भली प्रतीत होती। थोडी तेज हवा चलती, तो सफेद फूलों से भरी टहनियां सारा आंगन फूलों से भर देती। कुछ समय बाद नीम के छोटे छोटे फल पक जाते। सारा दिन नीम की निबोलियां आंगन में गिरती रहतीं। दिन में तो साथ साथ सफाई होती रहती, लेकिन रात को जब वे गिरतीं, तो सुबह उठने पर पूरा आंगन कडवी कसैली निबोलियां से भरा मिलता। जब तक आंगन की सफाई न हो जाती, घर के सभी सदस्य चिपचिपाहट से बचते बचाते निकलते।

बहुत सारे पक्षियों के झुंड, जैसे कि चिड़ियां और कौवे, नीभ की ऊँची शाखाओं पर सुबह ही डेरा जमा लेते। उनकी बीट और चहचहाहट सभी को परेशान करती। नीचे गिरी निबोलियां को देखकर न जाने कहां से चमकीली आंखों वाली गिलहरियां भी आ जातीं, जो निबोली को अपने पंजों में पकड़कर स्वाद लेकर खातीं।

कच्चे पक्के फलों से लदे आमों के पेड़ भी अपने भरपूर यौवन में होते। अनेक प्रकार के पक्षियों को आमों की शाखाओं ने आश्रय दे रखा था। कोयल की कूहू–कूहू की मधुर आवाज सभी को बडी सुहावनी लगती। आम के बागीचे का संगीतमय वातावरण मन में नई उमंगे भर देता।

सावन ऋतु के आते ही घर के सभी लोग आमों को संभालने में लग जाते। पके आमों को अलग से इकट्ठा किया जाता और कच्चे आमों को अचार आदि के लिए रख लिया जाता। कई बार जब आम अधिक मात्रा में पक जाते, तो उन्हें संभालना मुश्किल हो जाता। तब घर की औरतें आम पापड बनाने में लग जातीं। घर आमों की खुशबू से महकने लगता।

जो भी मेहमान आता, उसकी नज़र सबसे पहले रस भरे, लाल–पीले आमों पर ही पड़ती। हर कोई उनके लिए लालायित रहता। उनके घर में आम के फल के लिए लोगों का तांता लगा रहता। लेकिन नीम की निबोलियां, पड़ी पड़ी सड़ती रहती। उन्हें कोई नज़र भर भी नहीं देखता। बस गंदगी मानकर जल्दी से जल्दी फैंकने की कोशिश की जाती।

नीम घर की उपेक्षा का शिकार हो चुका था। उसे यह अहसास हो रहा था कि अब इस घर के लोगों को उसकी कोई आवश्यकता नहीं रही। उसकी शांखाओं पर भी नई कौपलें प्रस्फुटित होती हैं, ऋतु आने पर फूल खिलते हैं, लेकिन अब कोई नहीं देखता।

नीम को वह जमाना याद आ रहा था, जब इस घर की माताजी सुबह उठते ही नीम की शाखाओं को निहारती, उसका आभार प्रकट करतीं। नीचे गिरी निबोलियों को संभालतीं। दातून के लिए टहनी तोडनी होती, तो पहले नीम से क्षमा मांगतीं। उन दिनों सभी लोग नीम की दातून से ही दांत साफ किया करते थे। माताजी तुलसी को जल अर्पित करने के बाद नीम की जड़ों को भी सींचती।

अब माताजी बूढ़ी हो चुकी हैं। कभी कभी उसके पास आती हैं। उनके दर्शन पाकर वह (नीम) की अपने आप को धन्य मानता है। बूढी दादी सभी को नीम के महत्व और गुणों के बारे में बताना चाहती हैं, लेकिन उन्हें 'पुराना' कहकर अनसुना कर दिया जाता है।

नीम को याद है कि कैसे माताजी हर रोग का उपचार उसकी कडवी पत्तियों और फलों में खोज लेती थीं। सुबह नाश्ते से पहले सभी को दो दो पते खाने के लिए देती थीं। नीम के अंगों का अर्क बनाकर रखती थीं। उसके उपयोग से फोडे–फुंसियों से राहत मिलती और खारिश व जलन में भी आराम मिलता। यही पत्ते चावलों में या कपडों में भी रखे जाते थे। इनसे वर्षों तक वस्तुएं खराब नहीं होती थीं। मसाला पीसने वाला डंडा भी नीम की लकडी से ही बनता था। निबोलियां तो सूखा कर रख ली जाती थीं।

नीम को वे सुहाने दिन याद आ गए जब बच्चे उसकी शाखाओं पर झूला डालते थे। उनके सखा भी आते, और मस्ती के साथ साथ नीम के पतों की भी मधुर सरगम बजने लगती।

अब दादी बूढ़ी हो गई हैं। अब वे लाठी की सहायता से निबोंलियां चुनती हैं, तो नीम अपने उल्लास को छिपा नहीं पाता ओर कुछ फूल और पत्तियां उनके ऊपर गिरा देता। बूढ़ी दादी उनकी कसैली निबोलियों को सहेज कर रखती हैं। दो तीन दिन बाद जब देखती हैं, तो टोकरी खाली मिलती है। वे समझ जाती हैं कि सफाई पसंद बहू ने फेंक दी हैं।

दादी अपने आप से बातें करती रहती हैं। बुदबुदाते हुए कहती है, "कितनी बार इनके बच्चे आम ज्यादा खाने से बीमार हुए हैं, और हर बार इन्हीं नीम की निबोलियों से ठीक हुए हैं। लेकिन अब मेरी हर सीख इन्हें नीम की तरह कड़वी लगती हैं।"

दादी कभी कभी नीम से अपने दिल की बातें करती हैं। देर तक नीम को निहारती रहती हैं। चांदनी की दूधिया किरणों में स्नान करता नीम उन्हें बहुत अच्छा लगता। वे बाहर चारपाई बिछाकर देर तक बैठी रहती। मां को अकेली बाहर बैठी देख, उनका बेटा मिन्नतें करके भीतर ले आता और कहता – "ऊपर से कौवों की बीट गिरती रहती है, देखों चारपाई पर नीम के कितने सड़े गले पत्ते और फल गिरे हैं। बीमार हो जाओगी।"

मां समझाती – "इसके पास बैठने से निरोगता आती है। रोग तो तुम्हारे वातानुकूलीत कमरे बांटते हैं। लेकिन तुम लोगों को अब क्या समझ आएगी।"

एक दिन बेटे ने कहा – "मां अब नीम बूढा हो चुका है। गंदगी बहुत फैलाता है। आंगन के बीच में भी अच्छा नहीं लगता। इसे कटा कर कोई फलदार पौधा लगवाएंगें।"

दादी नीम के काटने की बात सुनते ही क्रोधित हो उठीं। बोली – "बेटा, ये तेरे बाप–दादाओं की निशानी है। इसे काटने की बात कभी सोच भी मत। यह हमारे परिवार का सदस्य हैं।"

बेटा मौन होकर भीतर चला गया।

दादीके लाख विरोध करने पर भी घर के सदस्य उसकी टहनियों को अक्सर थोडा थोड़ा काटते रहते। दाएं बाएं और ऊपर नीचे फैली उसकी विशाल शाखाओं को काट दिया जाता। दादी भारी मन से यह सब देखतीं। जब सहन न होता तो डांट देतीं। पर अब उनकी कौन सुनता था ?

इन सब बातों के बावजूद, सभी लोग दादी से डरते भी थे और उनका सम्मान भी करते थे। दादी कडवी जरूर थीं, लेकिन उनका हृदय प्रेम और करुणा से भरा था। बाहर से नीम की निबोली जैसी कड़वी, लेकिन भीतर से स्नेह और वात्सल्य से भरपूर। कई बार लगता कि वह करुणा और दया की मूर्ति हैं, लेकिन जब उनकी बात न मानी जाती, तो वह कड़वी सच्चाई की तरह सबके सामने खडी हो जातीं।

एक सुबह 'ठक ठक' की आवाज से दादी की आंख खुल गई। देखा, उनका छोटा बेटा कुल्हाड़ी लेकर नीम के बलशाली तने को काटने की तैयारी कर रहा है। एक मित्र पास खडा था, दूसरा बेटा आरी पकडे हुए था।

दादी भीतर तक कांप गईं। उन्हें लगा जैसे आरी नीम के लिए नहीं, बल्कि उनके लिए लाई गई है। उन्होंने नीम की ओर देखा, तो लगा जैसे कोई बुजुर्ग दोनों हाथ जोडकर सहायता की भीख मांग रहा हो। दादी लाठी टेकती हुई नीम के पास पहुंची। उनकी आवाज में एक अद्‌भुत आवेग था। वे बोली –

"मूर्खो, तुम लोग कितने कृतघ्न हो। तुम्हारे परदादा के हाथों से लगा यह पेड इस परिवार का आश्रयदाता है। इसने हमारे साथ रहकर सबको पलते बढ़ते देखा है। यह हमारे कुटुंब के दुख–सुख का साक्षी है। इसने न जाने कितनी होलियां, कितनी दिवालियां हमारे साथ मनाई हैं। इसने इस परिवार के कितने लोगों का जन्म और मरण देखा है। अनेकों वर्षों से यह हमारे श्वासों के लिए शुद्‌ध वायु दे रहा है। तुम लोग सौ जन्म लेकर भी इसका ऋण नहीं चुका सकते।"

सारा परिवार दादी को इस रूप में देखकर चकित और भयभीत था। बडा बेटा मां के सामने झुककर समझाने की कोशिश करने लगा –

"मां, इसकी जगह बहुत ही सुंदर फलदार पेड़ लगाएंगें। नीम अब बहुत पुराना हो गया है।"

दादी बोली – "पुराना होकर भी एकदम स्वस्थ है। तुम लोग नए होकर भी मानसिक रोगी हो।"

दूसरे बेटे ने कहा – "लेकिन यह आंगन के बीचों–बीच अच्छा नहीं लगता। कृपया इसे काटने दो।"

दादी अवाक रह गईं। फिर अचानक नीम के तने से लिपट गईं और बोली –

"ठीक है, इसे काट दो – लेकिन इसे हाथ लगाने से पहले तुम्हें मुझे काटना होगा।"

मां का इतना कठोर निर्णय सुनकर उनके हाथों से कुल्हाड़ी गिर पड़ी। घर के सदस्य दादी के पांव पकड़ने लगे। लेकिन दादी अटल और निर्भीक बनी रहीं।

धीरे–धीरे सभी पीछे हट गए। दादी को अपने सिर पर नीम के कोमल स्पर्श का अनुभव हो रहा था। उनकी आंखों से बहती अश्रुधारा नीम की जड़ों को सींच रही थी। उसी समय नीम की कुछ पत्तिया और फल दादी के सिर पर गिरे। सभी लोग हतप्रभ थे।

"इंसान बन जा"

ज्योति प्रभा
हिन्दी विभाग
सीएसआईआर–
भारतीय समवेत औशध संस्थान, जम्मू

(1) ना रंग से, ना मजहब से, अपनी तू पहचान रख
रख दिल मैं मोहब्बत बस, तू इक इंसान बन जा।

(2) देख नफरतों का धुआँ, जहां भी उठ रहा हो,
बन एक दीया वहाँ, तू इक मुस्कान बन जा।

(3) जो गिरा है उसे, बढ़ा कर हाथ उठा दे ज़रा,
हर किसी की दुआ का, सच में, तू इमान बन जा

(4) जुबां से सच में गर तू, खुदा बोलता है,
तो लहजे में उसका, तू ऐलान बन जा।

(5) किसी की भी आँखों में कभी अश्क न बहे,
तो मरहम ए दर्द सा. तू इक अरमान बन जा।

(6) तेरी बातों में हरदम, नर्मी का ही मौसम रहे,
सख्ती के बीच में, तू इक मेहरबान बन जा।

(7) तेरा चेहरा ही नहीं, तेरी नीयत भी तो कहे,
हर दिल की दुआ की, तू पहचान बन जा।

(8) नफरत की राहों में, चलना तो बहुत मुश्किल है,
तू मोहब्बत की राह का, नूरी मेजबान बन जा।

(9) अगर बोलता है तू, हकीकत की ही तरह,
तो हकीकत से भी बढ़कर, तू इंसान बन जा।

(10) कभी झगड़ों को चुप्पी से, साध कर दे जवाब,
घोर सन्नाटे का भी, गजब तू बयान बन जा।

(11) किसी की गलती पे, डाल कर शानदार पर्दा,
नूर–ए–खुदा का, तू इक फरमान बन जा।

(12) कोशिश हो, तेरी सॉसों से महके, जमीन–ए–फजा,
मोहब्बत ए खुदा का चलता, इक बयान बन जा।

(13) जहाँ दिल दुखे कहीं, वहाँ हंसी–खुशी बाँट दे,
हर जख्म का तू, मरहम ए जान बन जा।

(14) जहाँ भी बैर, नफरतें बॉटती हैं, खलल दिलों में,
वहीं मोहब्बत के रिश्तों का, तू नूरी निशां बन जा।

(15) तेरा लहजा अगर रहम ओ करम से भर जाए,
तो "प्रभा" से ही खुदा का ही, तू मेहरबान बन जा।

नराकास, जम्मू (014) के सदस्य कार्यालयों द्वारा राजभाषा के उत्थान में आयोजित किए गए कार्यक्रमों की झलकियाँ

नराकास, जम्मू (014) के विभिन्न सदस्य कार्यालयों द्वारा समय- समय पर राजभाषा हिन्दी के उत्थान के लिए कार्यक्रम आयोजित किए जाते हैं। इन कार्यक्रमों का उद्देश्य राजभाषा हिन्दी का सरकारी अधिकारियों/ कर्मचारियों में प्रचार-प्रसार व बढ़ावा देने का रहता है, जिससे की वह अपने कार्यालयों का कार्य हिन्दी में सुगमता के साथ कर सकें। इन संस्थानों द्वारा हिन्दी की कार्यशालाएँ, प्रशिक्षण कार्यक्रम व हिन्दी से संबंधित प्रतियोगिताएँ आयोजित करवाई जाती है तथा विजेताओं को उचित पुरस्कार देकर सम्मानित भी किया जाता है।

1. क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय, जम्मू: में "हिंदी पखवाड़ा" का सफल समापन

क्षेत्रीय पासपोर्ट कार्यालय (RPO) जम्मू, विदेश मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा 14 से 29 सितम्बर 2025 तक "हिंदी पखवाड़ा" का आयोजन किया गया। यह आयोजन क्षेत्रीय पासपोर्ट अधिकारी श्री राजेश कुमार के मार्गदर्शन में संपन्न हुआ। उन्होंने हिंदी भाषा के महत्व तथा कार्यालय कार्यों में इसके प्रयोग पर बल देते हुए कर्मचारियों को प्रोत्साहित किया। पखवाड़े के दौरान कर्मचारियों के लिए प्रश्नोत्तरी, निबंध लेखन, टिप्पण/आलेखन, अनुवाद और भाषण जैसी विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। समापन दिवस पर कवि सम्मेलन भी आयोजित किया गया, जिसे भारतीय सांस्कृतिक संबंध परिषद (ICCR) और आरपीओ जम्मू ने "हॉराइजन सीरीज़" पहल के तहत संयुक्त रूप से प्रस्तुत किया। सम्मेलन में जम्मू संभाग के प्रसिद्ध कवि श्री बृज मोहन, डॉ. राजकुमार, डॉ. अरुणा शर्मा, श्री शेख मोहम्मद कल्याण और श्रीमती विजया ठाकुर ने अपनी रचनाओं से श्रोताओं को मंत्रमुग्ध कर दिया। कार्यक्रम के दौरान वाद-विवाद और भाषण प्रतियोगिताएं भी आयोजित हुईं, जिनमें कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। विजेताओं को आरपीओ जम्मू की ओर से पुरस्कृत किया गया। पूरे पखवाड़े में कर्मचारियों की सक्रिय भागीदारी और हिंदी के प्रति उत्साह ने इस आयोजन को विशेष बना दिया।

2. जनगणना कार्य निदेशालय, जम्मू :

जनगणना कार्य निदेशालय, जम्मू में एक दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का आयोजन निदेशक महोदय, श्री भूपिंदर कुमार की अध्यक्षता में दिनांक 13 फ़रवरी, 2025 को ऑनलाइन माध्यम के द्वारा किया गया, जिसमें श्रीनगर कार्यालय के अधिकारी/कर्मचारी ऑनलाइन माध्यम से जुड़ें। इस कार्यशाला की प्रस्तुति डॉ. पुरुषोतम

कुमार, सहप्राध्यापक, हिन्दी विभाग ,जम्मू विश्वविद्यालय, श्री संतोष कुमार,सहायक निदेशक राजभाषा विभाग ,जम्मू एवं डॉ. ज्योति रानी, सहायक आचार्य, मौलाना आजाद मेमोरियल डिग्री महाविद्यालय, जम्मू ने दी। निदेशक महोदय द्वारा कार्यशाला को संबोधित किया गया तथा श्री संतोष कुमार,सहायक निदेशक राजभाषा विभाग ,जम्मू द्वारा "राजभाषा नीति एवं नियम" पर प्रस्तुतीकरण दिया गया।

3. क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान जम्मू (आई.आर.ए.आर):

क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान जम्मू (आई.आर.ए.आर), केंद्रीय आयुर्वेदिक विज्ञान अनुसंधान परिषद (.एस.ए.आर.सी.सी), आयुष मंत्रालय, भारत सरकार में 'त्रैमासिक हिन्दी कार्यशाला' तथा 14 सितम्बर से 30 सितम्बर 2025 तक 'हिन्दी पखवाड़े' का आयोजन किया गया। हिन्दी पखवाड़े के दौरान संस्थान में विविध प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया, जिनमें श्रुतलेख, वादविवाद-, निबंध लेखन, अन्ताक्षरी आदि शामिल थे। कर्मचारियों एवं अधिकारियों ने पूरे उत्साह से इन प्रतियोगिताओं में भाग लिया। पूरे समारोह में सहभागिता और सांस्कृतिक उल्लास का अद्भुत संगम देखने को मिला। समापन समारोह बड़े उत्साह एवं गरिमामय वातावरण में सम्पन्न हुआ। संस्थान प्रभारी एवं अनुसंधान अधिकारी डॉ. हरबंस सिंह (आयुर्वेद) ने अध्यक्षीय सम्बोधन प्रस्तुत करते हुए हिन्दी भाषा की महत्ता पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि हिन्दी केवल हमारी राजभाषा ही नहीं, बल्कि यह हमारी संस्कृति और पहचान की वाहक भी है। इस अवसर पर विशेष अतिथि के रूप में वरिष्ठ स्वतंत्र निर्देशक एवं निर्माता श्री मनोज गुप्ता उपस्थित रहे।

4. रक्षा सम्पदा कार्यालय, जम्मू:

प्रधान निदेशालय, रक्षा सम्पदा, पश्चिमी कमान के उपनिदेशक श्री विश्वास सौहेल (भ.र.सं.से.) ने 24 मार्च 2025 सरकारी कामकाज में राजभाषा के प्रयोग के संबंध में कमान स्तर पर राजभाषीय निरीक्षण किया।

5. भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू:

राजभाषा कार्यशालाएँ एवं तकनीकी प्रशिक्षण:

a. **नोटिंग, ड्राफ्टिंग एवं यूनिकोड विषय पर**) जम्मू में **30 मई 2025 को एक-दिवसीय हिन्दी कार्यशाला का सफल आयोजन किया गया।** कार्यशाला का उद्देश्य प्रशासनिक एवं तकनीकी संचार में हिन्दी के प्रभावी उपयोग को बढ़ावा देना था, जो भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुरूप है।

b. प्रो. विद्या शंकर सहाय, निदेशक, के नेतृत्व में कर्मचारियों हेतु **4 से 8 अगस्त 2025** तक **5-दिवसीय "हिन्दी शब्द संसाधन/हिन्दी टंकण" अल्पावधि प्रशिक्षण (वैलिडेशन कोर्स)** का सफल समापन हुआ। इसमें **श्री संतोष कुमार**, सहायक निदेशक, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार (हिन्दी शिक्षण योजना, गंग्याल, जम्मू) ने विषय-विशेषज्ञ के रूप में मार्गदर्शन प्रदान किया। प्रशिक्षण के दौरान प्रतिभागियों को **हिन्दी शब्द संसाधन, हिन्दी टंकण, हस्तलेखन, पत्र-लेखन तथा डेटा निर्माण** जैसे व्यावहारिक विषयों पर विस्तृत अभ्यास करवाया गया।

क. हिंदी पखवाड़ा आयोजन:

1. 14 - 28 सितंबर 2025 को हिंदी पखवाड़ा के अंतर्गत प्रतियोगिताओं, भाषण एवं लेखन कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया।
2. हिन्दी पखवाड़ा 2025 के उपलक्ष्य में संस्थान द्वारा युवा संसद 2025 का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में आईआईएम जम्मू तथा जम्मू-कश्मीर और भारत के विभिन्न स्कूलों, कॉलेजों एवं विश्वविद्यालयों के लगभग 150 विद्यार्थियों ने सक्रिय रूप से भाग लिया। कार्यक्रम का उद्देश्य युवाओं में संसदीय परंपराओं, नेतृत्व कौशल और हिन्दी में अभिव्यक्ति क्षमता को प्रोत्साहित करना था।
3. हिन्दी पखवाड़ा 2025 के तहत संस्थान की द्विभाषी वार्षिक हिन्दी पत्रिका 'त्रिकुटा' (पाँचवाँ संस्करण) का लोकार्पण किया गया। यह संस्करण राजभाषा गतिविधियों, रचनात्मक लेखन, छात्र-भागीदारी तथा साहित्यिक अभिरुचियों को बढ़ावा देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है।

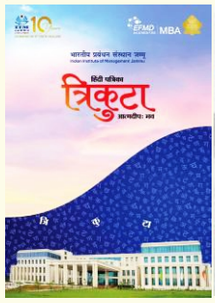

ख. राजभाषा क्षेत्र में मान्यता: 23 June 2025 को नराकास, जम्मू की अर्धवार्षिक बैठक में भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू को भारत सरकार की राजभाषा नीति के अनुकरणीय अनुपालन हेतु सम्मानित किया गया। यह प्रतिष्ठित सम्मान संस्थान की प्रशासनिक और शैक्षणिक कार्यप्रणाली में हिंदी के सतत् और प्रभावी उपयोग को रेखांकित करता है। संस्थान के निदेशक प्रो. बी.एस. सहाय के नेतृत्व में हिंदी को संस्थान की कार्य संस्कृति का अभिन्न अंग बनाने के लिए निरंतर प्रयास किए गए हैं।

6. भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जम्मू:

हिंदी प्रकोष्ठ, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जम्मू द्वारा **"अविप्रणश-25"** (अभियांत्रिकी, विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं अन्वेषण) पर एक दिवसीय राजभाषा अधिवेशनपर एक दिवसीय राजभाषा अधिवेशन का आयोजन किया गया, जिसका उद्देश्य अभियांत्रिकी, विज्ञान, प्रौद्योगिकी एवं अन्वेषण के क्षेत्र में हिंदी भाषा में अनुसंधान को बढ़ावा देना रहा। इस अवसर पर मुख्य अतिथि श्री राहुल कुमार सचान, उप महानिदेशक (सुरक्षा), दूरसंचार विभाग, जम्मू ने बताया कि वर्तमान में तकनीकी शिक्षा मुख्यतः अंग्रेज़ी भाषा में संचालित होती है, ऐसे में आईआईटी जम्मू द्वारा इस प्रकार के अधिवेशन का आयोजन आम जनमानस को अनुसंधान की जानकारी उनकी हिंदी भाषा में देने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम है। उन्होंने छात्रों को संदेश दिया कि शोध किसी भी भाषा में किया जा सकता है, किंतु यदि उसे समाज की भलाई के लिए समाज की भाषा में प्रस्तुत किया जाए तो उसका प्रभाव अधिक व्यापक और उपयोगी होगा। कार्यक्रम की अध्यक्षता प्रोफेसर अनुराग मिश्र, संकायाध्यक्ष अवसंरचना), योजना एवं प्रबंधन आईआईटी जम्मू ने की। उन्होंने कहा कि राजभाषा हिंदी में कार्य करना एवं हमारा व्यवहारिकता में हिंदी भाषा का प्रयोग देना हमारा संवैधानिक कर्तव्य तो है इसके साथ–साथ नैतिक दायित्व भी है अधिवेशन को तीन सत्रों में विभाजित किया गया, जिसमें कुल 26 शोधपत्र शोधकर्ताओं द्वारा हिन्दी भाषा में प्रस्तुत किए गए।

हिन्दी प्रकोष्ठ, भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जम्मू द्वारा संस्थान के तकनीकी एवं सांस्कृतिक वार्षिक उत्सव **-अनहद"2025"** के उद्घाटन समारोह की संध्या पर **"काव्य संध्या"** के रूप में एक कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस काव्य संध्या में देश के सुप्रसिद्ध कवि डॉ . विष्णु सक्सेना जी, लोकप्रिय कवि श्री लटूरी लट्ठ जी, और प्रतिष्ठित कवयित्री सुश्री वंदना विशेष जी अपनी कविताओं के माध्यम से श्रोताओं को आनंदित किया।

सस्थान में 14 से 29 सितंबर 2025 तक हिंदी पखवाड़ा का सफल आयोजन किया गया। इस दौरान निबंध लेखन, प्रपत्र प्रारूपण एवं आलेखन, सुलेख, श्रुतलेख, आशुभाषण, सृजनात्मक कथा लेखन और तकनीकी प्रस्तुति जैसे विविध कार्यक्रमों एवं प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। संस्थान के विद्यार्थियों एवं कर्मचारियों ने उत्साहपूर्वक भाग लेकर हिंदी भाषा के प्रयोग को प्रोत्साहित किया और अपनी प्रतिभा का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया।

26 सितंबर 2025 को हिन्दी प्रकोष्ठ द्वारा अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए एक दिवसीय राजभाषा कार्यशाला का सफल आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का उद्देश्य प्रशासनिक कार्यों में हिन्दी के सहज, सरल और शुद्ध प्रयोग को बढ़ावा देना था। उद्घाटन सत्र में डॉ भगवती देवी एवं अध्यक्षीय मार्गदर्शन में . डॉ. अनूप शुक्ला ने, प्रतिभागियों को प्रशासनिक पत्राचार, टिप्पण और प्रारूपण में मानक हिन्दी के प्रयोग की महत्वता समझाई। कार्यशाला में दो तकनीकी सत्र आयोजित किए गए। प्रथम सत्र में कार्यालयी लेखन में हिन्दी व्याकरण और वर्तनी पर चर्चा हुई, जबकि द्वितीय सत्र में राजभाषा के कार्यान्वयन में आने वाली चुनौतियाँ और उनके समाधान पर गहन विचार प्रस्तुत किए गए ।

29 सितंबर को आयोजित समापन सत्र में डॉ. सरताज उल हसन (अधिष्ठाता, प्रशासनिक मामले) ने प्रतिभागियों के उत्साह की सराहना की और विजेताओं एवं प्रतिभागियों को प्रमाण पत्रों से सम्मानित किया गया।

यह आयोजन हिंदी भाषा के महत्व और उसके प्रोत्साहन के प्रति संस्थान की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

7. सीएसआईआरजम्मू (आईआईआईएम-सीएसआईआर) भारतीय समवेत औषध संस्थान-:

संस्थान में हिंदी सप्ताह समारोह कार्यक्रम का सफल आयोजन 12 से 22 सितमबर 2025 तक किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ डॉ. ज़बीर अहमद, निदेशक, सीएसआईआर-भारतीय समवेत औषध संस्थान, जम्मू द्वारा दीप प्रज्वलन के साथ किया गया। इस दौरान कई प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं जिनमें संस्थान के सदस्यों तथा आरआरएलहाई स्कूल के छात्रों द्वारा भारी प्रतिभागिता दर्ज हुई। इन प्रतियोगिताओं के मूल्यांकन हेतु अलग अलग निर्णायक मण्डल के सदस्यों द्वारा सभी विजेताओं का चयन किया गया।

हिंदी सप्ताह समारोह कार्यक्रम के दौरान 22.11.2025 को संस्थान के समस्त स्टाफ सदस्यों तथा शोध छात्रों के लिए राजभाषा विभाग द्वारा बनाया गया ई-टूल 'कंठस्थ 2.0 पर एक कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला में श्री संतोष कुमार, सहायक निदेशक, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, हिंदी शिक्षण योजना, जम्मू संसाधन मुख्य व्यक्ता के रूप में उपस्थित रहे।

8. समेकित क्षेत्रीय कौशल विकास, पुनर्वास एवं दिव्यांगजन सशक्तिकरण केंद्र, जम्मू (साम्बा):

समेकित क्षेत्रीय कौशल विकास केंद्र, जम्मू में 19 मार्च 2025 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस इस कार्यशाला का विषय राजभाषा नीति और कार्यालय में हिंदी का उपयोग था। इस कार्यशाला में श्री संतोष कुमार, सहायक निदेशक, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, हिंदी शिक्षण योजना, जम्मू संसाधन व्यक्ति के रूप में उपस्थित थे।

समेकित क्षेत्रीय कौशल विकास केंद्र में 27 जून 2025 को हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया। इस कार्यशाला का विषय कार्यालय में हिंदी टिप्पण और प्रारूपण का उपयोग था। इस कार्यशाला में डॉ. जितेन्द्र शर्मा, निदेशक, पंडित दीनदयाल उपाध्याय राष्ट्रीय शारीरिक दिव्यांगजन संस्थान (दिव्यांगजन), नई दिल्ली संसाधन व्यक्ति के रूप में उपस्थित थे।

9. केंद्रीय विश्वविद्यालय (सीयूजे), सांबा (जम्मू):

जम्मू केंद्रीय विश्वविद्यालय ने छात्रों, शिक्षकों और कर्मचारियों की भारी उत्साह भरी भागीदारी के साथ अपने हिंदी पखवाड़े 2025 का सफलतापूर्वक समापन किया। वाद-विवाद, कविता, निबंध लेखन, प्रश्नोत्तरी, टाइपिंग प्रतियोगिताओं से लेकर जख और विजयपुर के सरकारी स्कूलों में आउटरीच कार्यक्रमों तक - इस कार्यक्रम ने रचनात्मकता, सांस्कृतिक गौरव और हिंदी की सच्ची भावना को प्रदर्शित किया। माननीय कुलपति प्रो. संजीव जैन ने सभी को बधाई दी और इस बात पर प्रकाश डाला कि हिंदी केवल एक भाषा नहीं, बल्कि हमारी सांस्कृतिक पहचान, परंपरा और एकता है। आइए, आने वाली पीढ़ियों के लिए हिंदी का उत्सव मनाएँ, उसका संरक्षण करें और उसे बढ़ावा दें!

निदेशिका
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (नराकास), जम्मू – 014

क्र.	कार्यालय का नाम व पता	कार्यालय अध्यक्ष का विवरण
1.	सीएसआईआर – भारतीय समवेत औषध संस्थान, केनाल रोड, जम्मू - 180001	डॉ. ज़बीर अहमद, निदेशक, सीएसआईआर- भारतीय समवेत औषध संस्थान, जम्मू व अध्यक्ष, नराकास, जम्मू-014 ई-मेल: director.iiim@csir.res.in & zahmed.iiim@csir.res.in फोन नं: : 0191-2584999, 2585222
2.	भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान जम्मू, जगती, नगरोटा, जम्मू - 181221	प्रोफेसर मनोज सिंह गौड़, निदेशक ई-मेल: director@iitjammu.ac.in & director.office@iitjammu.ac.in फोन नं: : 0191-2570381
3.	भारतीय प्रबंधन संस्थान जम्मू जगती, नगरोटा, जम्मू - 181221	प्रोफेसर विद्या शंकर सहाय, निदेशक ई-मेल: director@iimj.ac.in फोन नं: : 0191-2741400
4.	क्षेत्रीय आयुर्वेद अनुसंधान संस्थान, केंद्रीय आयुर्वेदिक विज्ञान अनुसंधान परिषद, आयुष मंत्रालय, बनतालाब, जम्मू - 181123	डॉ. हरबंस सिंह, प्रभारी अनुसंधान अधिकारी ईमेल: dr.harbans@rediffmail.com फ़ोन नं. 9501248820
5.	अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, जम्मू -184120	प्रो. शक्ति गुप्ता, प्रमुख अधिशासी अधिकारी व निदेशक फोन नं: 8082035882
6.	रेशम तकनीकी सेवा केंद्र, केंद्रीय रेशम प्रौद्योगिकी अनुसंधान संस्थान, केंद्रीय रेशम बोर्ड, मीरा साहिब, जम्मू - 181101	डॉ. आलोक सिंह, वैज्ञानिक - बी ई-मेल: scthjam@gmail.com फोन नं: : 01923-266875
7.	क्षेत्रीय रेशम उत्पादन अनुसंधान केंद्र, केंद्रीय रेशम बोर्ड, मीरा साहिब, जम्मू - 181101	डॉ. संतोष कुमार मगदुम, वैज्ञानिक-डी ई-मेल: rsrsjam.csb@nic.in & rsrsjam.csb@gmail.com फोन नं: : 01923-263523, 7417473282
8.	राष्ट्रीय जल विज्ञान संस्थान, पश्चिमी हिमालय क्षेत्रीय केंद्र, जम्मू कैंट-180003	डॉ. रियाज़ अहमद मीर, वैज्ञानिक–C व अध्यक्ष ईमेल: riyazmir.nihr@gov.in फोन: 9797055222
9.	केन्द्रीय जल आयोग, चिनाब मण्डल, जल आयोग भवन, राजिंदर नगर, बनतालाब, जम्मू	श्री अमित मित्तल, अधिशासी अभियंता ईमेल: execjammu@gmail.com फोन नं: 0191-2597688
10.	जल संसाधन नदी विकास एवं गंगा संरक्षण विभाग, केन्द्रीय जल आयोग सिन्धु बेसिक संगठन प्रबोधन एवं मुल्यांकन निदेशालय, केन्द्रीय जल आयोग भवन, राजेन्दर नगर, बनतालाब, जम्मू-181123	श्री रवि रंजन, निदेशक ईमेल: dirmajammu-cwc@nic.in फोन नं: 0191-2597667
11.	केन्द्रीय भूमि जल बोर्ड, उत्तर पश्चिम हिमालय क्षेत्र, तृतीय तल, जल आयोग भवन, राजिंदर नगर फेज़-1, बनतालाब, जम्मू-181123	श्री कुशाल सिंह रावत, क्षेत्रीय निदेशक ईमेल: rdnwhr-cgwb@nic.in, ksrawat.cgwb@gov.in फोन नं: 8630126247, 0191-2592090
12.	कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी), शाखा कार्यालय, शक्ति नगर, जम्मू - 180001	श्री जय प्रकाश नारायण सिंह, प्रधान महालेखाकार ई-मेल: singhjpn@cag.gov.in फोन नं: : 0191-2581290, +91-9868933772
13.	कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा परीक्षा), शक्ति नगर, जम्मू – 180001	श्री स्वांग थारचिन, महालेखाकार ईमेल: bragaujammu@cag.gov.in फोन नं: 0191-2580403
14.	क्षेत्रीय प्रशिक्षण संस्थान, भारतीय लेखा तथा परीक्षा विभाग, ए जी ऑफिस कॉम्प्लेक्स, शक्ति नगर, जम्मू-180001	फोन नं: 0191-2580598 ईमेल: rtijammu@cag.gov.in
15.	प्रभारी, राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय, 133-मुखर्जी बाज़ार, उधमपुर	श्री राजेश कुमार, उप निदेशक ईमेल: ro.jam-fod@nic.in, fodro.jam@gmail.com फोन नं: 0191-2439828, 8716851955
16.	समेकित क्षेत्रीय कौशल विकास पुनर्वास एवं दिव्यांगजन सशक्तिकरण केंद्र, 11- एक्सटेंशन डी-2, गांधी नगर, जम्मू -180004	डॉ. रोहनिका शर्मा, निदेशक ईमेल: adocrcjammu.pdni@iphnewdelhi.in, dircrcjammu.pdni@iphnewdelhi.in फोन नं: 0191-2951971, 9906070316

17.	जनगणना कार्य निदेशालय, त्रिकुटा नगर, जम्मू	श्री अमित शर्मा (भा. प्रा. से.), निदेशक ईमेल: dcojammu.rgi@nic.in फोन नं: 0191-2475422, 2475423
18.	भारतीय मानक ब्यूरो, जम्मू कश्मीर शाखा कार्यालय, लैन न .4, सिडको औद्योगिक परिसर, बड़ी ब्राह्मना, जम्मू-181133	श्री तिलक राज, निदेशक व वैज्ञानिक-ई ईमेल: jkbo@bis.gov.in फोन नं: 01923-222690
19.	कर्मचारी भविष्य निधि संगठन, क्षेत्रीय कार्यालय जम्मू, रेल्वे रोड़, जम्मू - 180012	श्री सुमीत सिंह, क्षेत्रीय भविष्य निधि आयुक्त – I फोन नं. : 0191-2473220/2472725 ई-मेल: ro.jammu@epfindia.gov.in
20.	अनुसूचित जाति /जनजाति हेतु नैशनल कॅरिअर सर्विस सेंटर, रोजगार महानिदेशालय, श्रम एवं रोजगार मंत्रालय (भारत सरकार) तोपशेरखानिया, शांति नगर, जम्मू – 181121	श्री गोपाल शरण, उप-क्षेत्रीय रोजगार अधिकारी ईमेल-ncsc.jammu-dget@gov.in फोन नं: 0191 2455521, 9427874016 , 7984849145
21.	कार्यालय क्षेत्रीय श्रमायुक्त (केन्द्रीय), 420-ए, गाँधी नगर, जम्मू-180004	श्री विशाल कुमार खरे ईमेल: rlc.jammu-mole@gov.in फोन नं: 0191-2450829
22.	नेहरू युवा केन्द्र संगठन, जम्मू व कश्मीर एवं लद्दाख, 39 ए/सी,, गाँधी नगर, जम्मू -180004	श्री निसार अहमद भट्ट, राज्य निदेशक ईमेल: Sd.jk.nyks@gmail.com फोन नं: 0191-2457950
23.	अपर मण्डल रेल प्रबंधक कार्यालय, जम्मू	श्री राजीव कुमार सिंह, अपर मण्डल रेल प्रबंधक ईमेल: adrmjat@gmail.com फोन नं: 9797532000
24.	रेलवे भर्ती बोर्ड, जम्मू श्रीनगर रेलवे कॉलोनी (पश्चिम), जम्मू-180012	श्री विनोद कुमार, सहायक सचिव फोन नं: 0191- 2426757, 9797532320
25.	केन्द्रीय प्रशासनिक अधिकरण जम्मू न्यायपीठ, वज़ारत रोड, जम्मू -180001	श्री बिजय झा, उप रजिस्ट्रार, कार्यालय अध्यक्ष ईमेल: filing-cat@gov.in फोन: 9431980404 ; 0191-2954045
26.	संयुक्त महानिदेशक विदेश व्यापार, 149-ए, गांधी नगर, जम्मू	श्री ए. के. भूषण, उप महानिदेशक ईमेल: jammu-dgft@nic.in
27.	पासपोर्ट कार्यालय, पासपोर्ट सेवा केंद्र, जम्मू	श्री राजेश कुमार, कार्यालय प्रभारी फोन नं: 9086019623
28.	भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण, क्षेत्रीय कार्यालय-315/1, प्रथम तल, छन्नी हिम्मत, जम्मू -180015	श्री आर एस यादव, कार्यालय अध्यक्ष एवं क्षेत्रीय अधिकारी ईमेल: rojammu@nhai.org फोन नं: 8130006052, 0191-2467505
29.	कार्यपालक अभियंता, जम्मू केन्द्रीय मण्डल-2, केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग, सतवारी कैंट, जम्मू	श्री आरुष, कार्यपालक अभियंता ईमेल: jameecjcd2.cpwd@nic.in फोन नं: 9915314475
30.	केन्द्रीय लोक निर्माण विभाग (एम्स), विजयपुर, जम्मू	फोन नं: 0191-2438800, 0191-2458799 ईमेल: jmuce-aiims@cpwd.gov.in
31.	केन्द्रीय एकीकृत नाशीजीव प्रबंधन केन्द्र, 48/12, नानक नगर, जम्मू-180004	श्री जे एस अंसारी, सहायक निदेशक (कीट विज्ञान) ईमेल: cipmc.jmu@rediffmail.com फोन नं: 0191-2453951
32.	राष्ट्रीय प्रतिदर्श सर्वेक्षण कार्यालय, क्षेत्रीय कार्यालय, 34-ए, सैनिक कॉलोनी, जम्मू-180011	श्री किशोर कुमार, उप महानिदेशक ईमेल: fodrojam@gmail.com फोन नं: 9419195579
33.	प्रसार भारती, भारतीय प्रसारण निगम, दूरदर्शन केन्द्र, जानीपुर, जम्मू	श्री संदीप कुमार, सहायक निदेशक ईमेल: seddkjammu@rediffmail.com फोन नं: 9419187394

34.	प्रादेशिक कार्यालय, क्षेत्रीय प्रचार निदेशालय, भारत सरकार, गाँधी नगर, जम्मू -180004	ईमेल: idrojammudfp@nic.in; dfpjammu@gmail.com
35.	पत्र सूचना कार्यालय, भारत सरकार, 223 शोपिंग सेंटर, नजदीक सब डिविजन (.ई.एच.पी), बक्शी नगर, जम्मू-180001	ईमेल: pib_jammujk@nic.in
36.	भारतीय सर्वेक्षण विभाग, जम्मू व कश्मीर, भूस्थानिक आकडा केन्द्र-, 65-नजदीक जोरावर स्टेडियम, छन्नी हिम्मत, जम्मू	श्री बलबीर सिंह, निदेशक फोन नं: 7006389830
37.	भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण (आर्कियोलॉजिकल सर्वे), 141/एडी-, ग्रीन वेल्ट, गाँधी नगर, जम्मू-180004	*अभी उपलब्ध नहीं*
38.	क्षेत्रीय निदेशालय, केन्द्रीय श्रमिक शिक्षा बोर्ड, रिहाड़ी कॉलोनी, प्लॉट न .: 261, रिहाड़ी, जम्मू	*अभी उपलब्ध नहीं*
39.	सहायक निदेशक, भारत सरकार, वस्त्र मंत्रालय, (हस्तशिल्प-शंकर टिम्बर उत्पादक), अखनूर रोड, तालाब तिल्लो, जम्मू	*अभी उपलब्ध नहीं*
40.	केन्द्रीय वस्तु एवं सेवा कर (लेखा परीक्षा) आयुक्तालय, ओ-.बी.32, रेल हेड कॉम्पलेक्स, जम्मू-180012	*अभी उपलब्ध नहीं*
41.	क्षेत्रीय वेतन एवं लेखा कार्यालय, बनतालाब, जम्मू	*अभी उपलब्ध नहीं*
42.	केन्द्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, मानित विश्वविद्यालय (श्री रणवीर परिसर), कोट भलवाल, जम्मू-181122	प्रो . सतीश कुमार कपूर , निदेशक ईमेल: director–jammu@csu.co.in फोन नं: 0191-2623533
43.	जम्मू केंद्रीय विश्वविद्यालय, राया सुचैनी, सांबा (जम्मू)	प्रो. संजीव जैन, कुलपति ईमेल: vc@cujammu.ac.in & sj.vc@cujammu.ac.in
44.	केन्द्रीय विद्यालय संगठन, क्षेत्रीय कार्यालय, जम्मू	श्री हर्षित मिश्रा, उपायुक्त ईमेल: kvsjammuhindi@gmail.com फोन नं: 88261 82701
45.	केन्द्रीय विद्यालय न .1, गाँधी नगर, जम्मू-180004	श्री आकाश गुप्ता, प्राचार्य ईमेल: kvno1jammu@gmail.com फोन नं: 9459323665
46.	केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक 1, अखनूर, क्षेत्रीय कार्यालय, जम्मू	श्री भूषण कुमार, प्राचार्य ईमेल: kv1akhnoor@gmail.com फोन नं: 01924-252810
47.	केन्द्रीय विद्यालय क्रमांक 2 अखनूर, जम्मू – 181201	श्री अमित वाल्टर, प्राचार्य ईमेल: kv2akhnoor@gmail.com फोन नं: 01924252052
48.	केन्द्रीय विद्यालय, केंद्रीय विश्वविद्यालय, राया सुचैनी, जम्मू	श्री अजीत कुमार शर्मा, कार्यवाहक प्राचार्य ईमेल: kendriyavidyalayacuj@gmail.com फोन नं: 01923-290576
49.	केन्द्रीय विद्यालय, दमाना, परखु कैंप, जम्मू	श्री कुमार कृष्ण डी, प्राचार्य ईमेल: kvdamana@gmail.com फोन नं: 01912958407
50.	केन्द्रीय विद्यालय, मीरां साहिब, जम्मू	श्रीमती सुनीता रानी, प्राचार्य ईमेल: Kvmiransahib@gmail.com फोन नं: 94179009966
51.	केन्द्रीय विद्यालय ज्योडीयां, जम्मू-181202	श्री हरीश कुमार, प्राचार्य ईमेल: kvjourian@gmail.com फोन नं: 7710173312
52.	केन्द्रीय विद्यालय नगरोटा, जम्मू-181221	डॉ राम किशन दहिया, प्राचार्य ईमेल: nagrotakv@gmail.com

		फोन नं: 0191-2673837 & 9996142142
53.	केन्द्रीय विद्यालय सीमा सुरक्षा बल, सुंदरबनी, जिला राजौरी, जम्मू – 185153	श्री अमित कुमार, प्राचार्य ईमेल: kvsunderbani@gmail.com फोन नं: 01960233268, 8219393268
54.	पीएम श्री जवाहर नवोदय विद्यालय, नारडी बाला, अखनूर, जम्मू – 2	श्रीमती संगीता शौनिक, प्राचार्य ईमेल: jnvakhnoor2017@gmail.com, sshonik23@gmail.com फोन नं: 8699199980
55.	जवाहर नवोदय विद्यालय, सुरनकोट, जिला पुंछ, जम्मू – 185121	श्री नितिन अरोड़ा, प्राचार्य ईमेल: nitin.kanishq@gmail.com & jnvsurankote1986@gmail.com फोन नं: 6005272907
56.	पीएम श्री केंद्रीय विद्यालय, सीमा सुरक्षा बल परिसर, राजौरी -185131	श्री विक्रांत कुमार, प्राचार्य ईमेल: kvrajouri2021@gmail.com फोन नं: 7018528374, 8899037415
57.	जवाहर नवोदय विद्यालय, नढ, जिला - साम्बा, जम्मू व कश्मीर -184121	श्री सत्या, प्राचार्य फोन नं: 7889896800
58.	जवाहर नवोदय विद्यालय, घरोटा (जम्मू व कश्मीर) - 181122	श्री तरंजीत सिंह, प्राचार्य ईमेल: jnvjammu1@gmail.com; फोन नं: 0191-2624919, 86076 39860
59.	पीएम श्री स्कूल जवाहर नवोदय विद्यालय, राजौरी, कोंटरका, जम्मू -185132	श्री संदीप कुमार जैन, प्राचार्य ईमेल- jnvrajouri222@gmail.com फोन नं: 62669 88730
60.	राष्ट्रीय मुक्त विद्यालयी शिक्षा संस्थान, क्षेत्रीय केंद्र, जम्मू	श्री देव प्रकाश नारायण, सहायक निदेशक ईमेल: rcjammu@nios.ac.in फोन नं: 0191-2574646, 9419244053
61.	समन्वय निदेशालय, अन्तर्राज्य पुलिस बेतार केंद्र, सिविल सचिवालय परिसर, बेतार, जम्मू 180001	श्री राजेंद्र विश्वकर्मा , संचार अधिकारी ईमेल: ispwjammu.dcpw@gov.in फोन नं: 9810235737
62.	केन्द्रीय अन्वेषण ब्यूरो (सीबीआई), पनामा चौक, रेल हेड कॉम्पलेक्स, जम्मू-180012	श्री सुनील कुमार मीणा, पुलिस उप अधीक्षक ईमेल: sunil.km93@cbi.gov.in, hobacjmu@cbi.gov.in फोन नं: 0191-2473250, 9549416444
63.	उप महानिरीक्षक उत्तरी क्षेत्र 2, केन्द्रीय औद्योगिकी सुरक्षा बल, सेक्टर-4, छन्नी हिम्मत, जम्मू	उप महानिरीक्षक ईमेल: dignz2-jammu@cisf.gov.in
64.	कमांडेंट कार्यालय, 7 वीं वाहिनी, सशस्त्र सीमा बल, एसएसबी छन्नी हिम्मत, जम्मू – 180015	श्री अच्युत सिंह, कमांडेंट, प्रभारी ईमेल: control.bn7@ssb.gov.in फोन नं: 0191-2467821, 9717827287, 9906122063, 9419026187
65.	क्षेत्रीय मुख्यालय सशस्त्र सीमा बल, छन्नी हिम्मत, जम्मू	श्री किसलय उपाध्याय, उप- कमांडेंट ई-मेल: kislayaupadhyaya.08@ssb.gov.in फोन नं. : 94190-26159
66.	फ्रंटियर मुख्यालय, सीमा सुरक्षा बल, पलौडा कैम्प, जम्मू	श्री शशांक आनन्द, भा. पु. से., महानिरीक्षक ईमेल: jmuftr@bsf.nic.in फोन नं: 0191-2581894
67.	कार्यालय पुलिस उप महानिरीक्षक, रेंज कार्यालय, केन्द्रीय रिज़र्व पुलिस बल, बनतालाब, जम्मू-181123	श्री नरेश कुमार यादव, पुलिस उप महानिरीक्षक ईमेल: digpcrpfjmu@gmail.com फोन नं: 0191-2591740
68.	जम्मू व कश्मीर अंचल मुख्यालय, केरिपुबल, बनतालाब, जम्मू -181123	श्री राजेश कुमार, उप महानिरीक्षक ईमेल: digadmjkz@crpf.gov.in फोन नं: 9533244511
69.	ग्रुप केन्द्र, केरिपुबल, हीरानगर, कूटा मोड़, कठुआ (जम्मू व कश्मीर)-184142	श्री मनोज कुमार, उप महानिरीक्षक ईमेल: gckta@crpf.gov.in फोन नं: 01922-295946, 9797541591
70.	निदेशालय, रक्षा संपदा, उत्तरी कमान, नरवाल पाई, जम्मू छावनी – 180003	श्री अजय कुमार सहगल, संयुक्त निदेशक ईमेल: dtenc-dgde@gov.in फोन नं: 0191-2431960
71.	रक्षा लेखा प्रधान नियंत्रक (आर्मी) नरवाल पाई, सतवारी जम्मू – 180003	श्री विपिन कुमार गुप्ता, रक्षा लेखा प्रधान नियंत्रक ईमेल: hindicellpcdanc.dad@hub.nic.in फोन नं: 01912430050

72.	कार्यालय पुलिस उप महानिरीक्षक, ग्रुप केन्द्र, केन्द्रीय रिज़र्व पुलिस बल, बनतालाब, जम्मू-181123	श्री भानु प्रताप सिंह, उप महानिरीक्षक ईमेल: gcbtb@crpf.gov.in फोन नं: 0191-2592071
73.	मुख्यालय, जम्मू सेक्टर, केन्द्रीय रिज़र्व पुलिस बल, बनतालाब, जम्मू-181123	श्री आर गोपाल कृष्णा राव (भा. पु. से.), महानिरीक्षक ईमेल: igcrpfjammu@gmail.com, jmushqs@crpf.gov.in फोन नं: 0191-2597701
74.	लेखा कार्यालय सम्पर्क (.पी), द्वारा 56 सेना डाकघर	श्री देवेन्द्र कुमार, सहायक लेखा अधिकारी ईमेल: ao-p-sampark.cgda@nic.in फोन नं: 0191 – 2954212
75.	स्थानीय लेखा परीक्षा अधिकारी (वायु सेना), जम्मू	श्री रवि कान्त शर्मा, वरिष्ठ लेख अधिकारी ईमेल: dad@gov.in, laoafjammu.dad@gov.in फोन नं: 9419464749
76.	वायु सेना स्टेशन, सतवारी, जम्मू कैंट, जम्मू-180003	श्री ए श्रीधर, एयर कमांडर अफसर ईमेल: s.edn.o@23wg.iaf.in, shwetanarang0203@gmail.com, peace-lily@gov.in फोन नं: 0191-2437847, 0191-2437847, 9650329934 8277154918
77.	मुख्य अभियंता, संपर्क परियोजना, कुंजवानी चौक पीर बाबा मजार के नजदीक, जम्मू 180010	श्री गर्जीत सिंह, ए.ओ.ए. ईमेल: bro-spk@nic.in फोन नं: 0191-2484882
78.	कैंटीन भंडार विभाग, भारत सरकार, रक्षा मंत्रालय, क्षेत्रीय डिपो, बी डी बाड़ी, बड़ी ब्राह्मना, जम्मू-181133	श्री राहुल डी भोसले, क्षेत्रीय प्रबंधक ईमेल: bdb@csdindia.gov.in फोन नं: 0192-3220481, 9967245919
79.	कार्यालय छावनी परिषद, मानेकशॉ रोड, टाइगर कैन्टीन के पास, सतवारी, जम्मू छावनी-180003	श्री अखिलेश बिहारी दास, मुख्य अधिशासी अधिकारी ईमेल: cbjammu@gmail.com, ceojamm-stats@nic.in फोन नं: 0191-2450992
80.	रक्षा संपदा कार्यालय, नरवाल पाई, सतवारी, जम्मू मण्डल नरवाल पाई, सतवारी, जम्मू छावनी 180003	श्री राम स्वरूप हरितवाल, रक्षा संपदा अधिकारी ईमेल: deojamm-stats@nic.in फोन नं: 0191-2455543
81.	स्पर्श सर्विस सेंटर, जम्मू	श्री जतिन कुमार, सहायक लेखा अधिकारी ईमेल: dpdojammu.dad@gov.in फोन नं: 01912432523
82.	राष्ट्रीय कैडेट कोर निदेशालय (एन .सी.सी.), जम्मू एवं कश्मीर, केनाल रोड, जम्मू-180001	फोन नं: 0191-2553187 ईमेल: ddgjandk@nccjandk.org
83.	कार्यालय कमांडेंट, 166 बटालियन, केन्द्रीय रिज़र्व पुलिस बल, सिठडा, जम्मू	ईमेल: co166bn@crpf.gov.in, hq166bn@crpf.gov.in फोन नं: 0191-2662981
84.	कार्यालय पुलिस उप महानिरीक्षक, रेंज हीरानगर, केन्द्रीय रिज़र्व पुलिस बल, नगरोटा, जम्मू-181221	ईमेल: ktarange@crpf.gov.in फोन नं: 0191-2674870
85.	33 बटालियन, केन्द्रीय रिज़र्व पुलिस बल, गंग्याल, जम्मू	ईमेल: co33bn@crpf.gov.in
86.	38 बटालियन, केन्द्रीय रिज़र्व पुलिस बल, साम्बा, जम्मू	ईमेल: co38bn@crpf.gov.in
87.	84 बटालियन, केन्द्रीय रिज़र्व पुलिस बल, चट्ठा, जम्मू	ईमेल: co84bn@crpf.gov.in
88.	160 बटालियन, केन्द्रीय रिज़र्व पुलिस बल, चट्ठा, जम्मू	ईमेल: co160bn@crpf.gov.in
89.	जम्मू उत्तरी कार्यालय, केन्द्रीय रिज़र्व पुलिस बल, छन्नी हिम्मत, जम्मू	ईमेल: digopsjamunorth@gmail.com

90.	मुख्यालय 56, पैदल सेना खण्ड, जम्मू छावनी मार्फ़त:56 ए.ओ.पी.	मेजर श्री जे एस शेखावत, एस ओ शेखावत, एस-.ओ.1 (शिक्षा)
91.	संयुक्त अस्पताल, केन्द्रीय रिज़र्व पुलिस बल, बनतालाब, जम्मू-181123	*अभी उपलब्ध नहीं*
92.	76 वी बटालियन, केन्द्रीय रिज़र्व पुलिस बल, छन्नी हिम्मत, जम्मू	*अभी उपलब्ध नहीं*
93.	मुख्यालय 163वीं वाहिनी, सीमा सुरक्षा बल, मार्फ़त :56 ए.ओ.पी.	*अभी उपलब्ध नहीं*
94.	सीमान्त मुख्यालय, सीमा सुरक्षा बल, पलौडा कैम्प, जम्मू-181124	*अभी उपलब्ध नहीं*
95.	सेक्टर मुख्यालय, सीमा सुरक्षा बल, पलौडा कैम्प, जम्मू	*अभी उपलब्ध नहीं*
96.	52वीं वाहिनी , सीमा सुरक्षा बल, मार्फत :56 सेना डाकघर	*अभी उपलब्ध नहीं*
97.	मुख्यालय 69 वीं बटालियन, सीमा सुरक्षा बल, मार्फ़त :56 ए.ओ.पी.	*अभी उपलब्ध नहीं*
98.	कार्यालय सेनानी 15वीं वाहिनी, भारत तिब्बत सीमा पुलिस (ITBP), गृह मंत्रालय, भारत सरकार, डाक घड़ी, ऊधमपुर-182121	*अभी उपलब्ध नहीं*
99.	कार्यालय लेखा परीक्षा अधिकारी, (कै. वि. भ.) , डिपो बी डी बाड़ी,, नजदीक रक्षा लेखा नियंत्रक, नरवाल पाई, सतवारी, जम्मू	*अभी उपलब्ध नहीं*
100.	मण्डल अभियंता, दूरसंचार परिमंडल प्रशिक्षण केन्द्र, बनतालाब, जम्मू-181123	*अभी उपलब्ध नहीं*

CSIR-IIIM

सी एक आईआर- भारतीय समवेत औषध संस्थान, जम्मू

राजभाषा विभाग Website : www.rajbhasha.gov.in
नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति , जम्मू (14)
Website: www.tolicjammu.org
Twitter: @NarakasJammu
Facebook / Instagram / YouTube: /NarakasJammu/
मोबाइल: 9622025100 (केवल राजभाषा कार्य हेतु)

अध्यक्षीय कार्यालय
Website: www.iiim.res.in
निदेशक ईमेल : director.iiim@csir.res.in
सदस्य सचिव ईमेल : sanjaysharma.iiim@csir.res.in

कार्यालय का पता

सीएसआईआर-भारतीय समवेत औषध संस्थान
कैनाल रोड, जम्मू (जम्मू व कश्मीर)